



सत्यमेव जयते

महाराष्ट्र शासन राजपत्र

प्राधिकृत प्रकाशन

वर्ष १, अंक २३] गुरुवार ते बुधवार, जुलै २-८, २०१५/आषाढ ११-१७, शके १९३७ [पृष्ठे ८१, किंमत : १०.०० रुपये

स्वतंत्र संकलन म्हणून फाईल करण्यासाठी प्रत्येक विभागाच्या पुरवणीला वेगळे पृष्ठ क्रमांक दिले आहेत.

भाग एक-अमरावती विभागीय पुरवणी

अनुक्रमणिका

भाग एक- शासकीय अधिसूचना : नेमणुका, पदोन्नती, अनुपस्थितीची रजा (भाग एक-अ, चार-अ, चार-ब व चार-क, यांमध्ये प्रसिद्ध करण्यात आलेले आहेत त्यांव्यतिरिक्त) केवळ अमरावती विभागाशी संबंधित असलेले नियम व आदेश.

संकीर्ण अधिसूचना : नेमणुका इ. इ., केवळ अमरावती विभागाशी संबंधित असलेले नियम व आदेश.

पृष्ठे
नाही

१-८१

भाग एक-अ.—(भाग चार-ब यामध्ये प्रसिद्ध करण्यात आलेले आहेत त्यांव्यतिरिक्त), केवळ अमरावती विभागाशी संबंधित असलेले महाराष्ट्र जिल्हा परिषदा व पंचायत समित्या, ग्रामपंचायती, नगरपालिका बरो, जिल्हा नगरपालिका, प्राथमिक शिक्षण व स्थानिक निधी लेखापरीक्षा अधिनियम याअन्वये काढण्यात आलेले आदेश व अधिसूचना.

पृष्ठे
नाही.

शासकीय अधिसूचना : नेमणुका, इत्यादी

नाही.

संकीर्ण अधिसूचना : नेमणुका, इत्यादी

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ६८५.

विभागीय आयुक्त, यांजकडून आदेश

क्रमांक विआअ-विकास-ग्रापं-विघटन-पहुरजिरा-२०१५.—

मुंबई ग्रामपंचायत अधिनियम, १९५८ चे कलम १४५, पोट-कलम १-अ नुसार निर्णय घेण्याचे राज्य शासनाचे अधिकार अधिसूचना क्र. व्हीपीए-१०८३-सीआर-१६७०-२१, दिनांक १-६-१९८३ नुसार विभागीय आयुक्त यांना प्रदान करण्यात आल्यानुसार व राज्य निवडणूक आयोगाचे परिपत्रक क्र. रानिआ-१०९६-प्र.क्र. २-९६-पंरा, दिनांक १५-६-१९९६ व ग्राम विकास व जलसंधारण विभागाचे शासन परिपत्रक क्र. ग्रापनि-२०१-प्र.क्र. ५५-०६, दिनांक ३०-६-२००१ चे अनुषंगाने मी, विभागीय आयुक्त, अमरावती विभाग, अमरावती आदेश पारित करित आहे.

(१) ग्रामपंचायत पहुरजिरा, ता. शेगांव, जिल्हा बुलडाणाचे विघटन घोषित करण्यात येते.

(२) दिनांक ४-१-२०१४ आदेशानुसार ग्रामपंचायत तत्कालिन सचिव यांचे निलंबनावर कायम राहून त्यांचेविरुद्ध नियमानुसार तातडीने कार्यवाही मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिल्हा परिषद, बुलडाणा यांनी करावी व कार्यपूर्ती अहवाल सादर करावा.

(३) अपर जिल्हाधिकारी, बुलडाणा व मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिल्हा परिषद, बुलडाणा यांनी नियमित निवडणूकीबाबत नियमानुसार आवश्यक ती कार्यवाही करावी.

(४) मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिल्हा परिषद, बुलडाणा यांनी विघटीत ग्रामपंचायतीवर प्रशासक म्हणून विस्तार अधिकारी यांची नेमणूक नविन ग्रामपंचायतीचे गठन होईपावेतो करावी.

सदर आदेश आज दिनांक १२ जून, २०१५ रोजी पारित करण्यात येत असून माझ्या सही व शिक्क्यानिशी निर्गमित करण्यात येत आहे.

अमरावती :

दिनांक १२ जून २०१५.

ज्ञा. स. राजुरकर,

विभागीय आयुक्त,

अमरावती विभाग, अमरावती.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ६८६.

जिल्हाधिकारी, यांजकडून

महाराष्ट्र जमीन महसूल अधिनियम, १९६६ चे कलम १२२

क्रमांक नमू २-नगर परिषद-फेरअधिसूचना-३३६०-२०१५.—

ज्याअर्थी, जिल्हाधिकारी, अमरावती यांना मौजा मोर्शी, ता. मोर्शी, जि. अमरावती येथील मूळ गावठाण हद्दी बाहेरील काही गावे व गट नंबर/भूमापन क्रमांक ची जमीन मौजा मोर्शी, ता. मोर्शी, जि. अमरावती येथील महाराष्ट्र जमीन महसूल अधिनियम, १९६६ चे कलम १२६ अन्वये करावयाच्या नगर भूमापनासाठी गावठाणाच्या हद्दीत सामील करणे आवश्यक वाटते;

त्याअर्थी, जिल्हाधिकारी, अमरावती हे महाराष्ट्र जमीन महसूल अधिनियम, १९६६ खंड-१ कलम १२२ अन्वये प्राप्त अधिकारानुसार सोबतचे परिशिष्ट-अ मध्ये नमूद केलेले गावे व गट नंबर/भूमापन क्रमांक ची जमीन नगर भूमापन कामासाठी मौजा मोर्शी, ता. मोर्शी, जि. अमरावती या गावाचे गावठाण हद्दीत समाविष्ट करित आहे.

परिशिष्ट-अ

मौजा मोर्शी, ता. मोर्शी, जि. अमरावती येथील नगर भूमापनाचे हद्दीत समाविष्ट होणारे स. नं./ग. नं. ची यादी

| अ. क्र. | आकारबंदाप्रमाणे | परिशिष्ट-अ-चालू | | | |
|---------|------------------|-----------------|-----|-----|--------|
| | सर्वे नं./गट नं. | क्षेत्र | (१) | (२) | (३) |
| (१) | (२) | (३) | | | हे. आर |
| | | हे. आर | १९ | १९ | ६ १२ |
| १ | १ | ० ४९ | २० | २० | ० ४० |
| २ | २ | ० ७७ | २१ | २१ | १ ६८ |
| ३ | ३ | १ १८ | २२ | २२ | ० ७० |
| ४ | ४ | ० ४२ | २३ | २३ | ० ८० |
| ५ | ५ | ० ४१ | २४ | २४ | २ ४३ |
| ६ | ६ | १ ६३ | २५ | २५ | १ ८९ |
| ७ | ७ | २ ०५ | २६ | २६ | २ ३३ |
| ८ | ८ | २ ३९ | २७ | २७ | ० ८१ |
| ९ | ९ | १ ९९ | २८ | २८ | १ ५२ |
| १० | १० | २ ३८ | २९ | २९ | ४ ८९ |
| ११ | ११ | १ १३ | ३० | ३० | ३ ९८ |
| १२ | १२ | १ ६४ | ३१ | ३१ | ६ ५२ |
| १३ | १३ | ० ९१ | ३२ | ३२ | ० ४६ |
| १४ | १४ | ० ५१ | ३३ | ३३ | ० २७ |
| १५ | १५ | ० ५७ | ३४ | ३५ | ६ २१ |
| १६ | १६ | २ ५३ | ३५ | ३८ | ६ ५३ |
| १७ | १७ | १ ६९ | ३६ | ४३ | २ ०२ |
| १८ | १८ | ६ ०३ | ३७ | ४४ | १ ५३ |
| | | | ३८ | ४५ | ५ ६५ |

परिशिष्ट-अ-चालू

| (१) | (२) | (३) हे. आर |
|----------|-----|---------------|
| ३९ | ४६ | ४ ८७ |
| ४० | ४७ | ४ ४६ |
| ४१ | ४८ | ११ ६३ |
| ४२ | ५० | ५ ४० |
| ४३ | ५५ | २ २१ |
| ४४ | ९४ | ० ५४ |
| ४५ | ९६ | ० ८१ |
| ४६ | ९७ | १ ०२ |
| ४७ | ९८ | ० ३४ |
| ४८ | ९९ | ० ६४ |
| ४९ | १०० | ० २५ |
| ५० | १०१ | ० ४६ |
| ५१ | १०२ | ० ३८ |
| ५२ | १०३ | ० ५० |
| ५३ | १०४ | ० ३५ |
| ५४ | १०५ | २ ६५ |
| ५५ | १०६ | २ ३० |
| ५६ | १०७ | ० २२ |
| ५७ | १०८ | ० ४३ |
| ५८ | १०९ | ० ६३ |
| ५९ | ११० | ० ९६ |
| ६० | १११ | ० ८३ |
| ६१ | ११६ | २ ८६ |
| ६२ | २०४ | २ २३ |
| ६३ | २०५ | ० ५१ |
| ६४ | २०६ | ६ ७५ |
| ६५ | २०७ | २ ७३ |
| ६६ | २०८ | ११ ८६ |
| ६७ | २१० | ८ ७८ |
| ६८ | २११ | ४ ०२ |
| ६९ | २१२ | २ ६२ |
| ७० | २१३ | ३ ८३ |
| ७१ | २१४ | ११ ३४ |
| ७२ | २१५ | ८ ४९ |
| ७३ | २१६ | ४ १२ |
| ७४ | २१७ | ५ ५४ |
| ७५ | २१८ | २ १५ |
| ७६ | २१९ | ० ४० |
| ७७ | २२० | २ ०९ |
| एकूण . . | | २०७ ७० |

सर्व्हे नं. चे एकूण क्षेत्र २०७ ७०
गावठाणाचे क्षेत्र ५५ ४३
एकूण क्षेत्र . . २६३ १०

परिशिष्ट-ब

| मौजा रसूलपूर, ता. मोर्शी, जि. अमरावती येथील नगर भूमापनाचे हद्दीत समाविष्ट होणारे स. नं./ग. नं. ची यादी | | |
|--|--------------------|---------------|
| अ. क्र. | सर्व्हे नं./गट नं. | क्षेत्र |
| (१) | (२) | (३) हे. आर |
| १ | १ | २ ५४ |
| २ | २ | ७ ०१ |
| ३ | ३ | १ ५५ |
| ४ | ४ | ५ १८ |
| ५ | ५ | ५ १९ |
| ६ | ६ | ० ८१ |
| ७ | ७ | ० १८ |
| ८ | ८ | ० ९५ |
| ९ | ९ | ० ९१ |
| एकूण . . | | २४ ३२ |
| सर्व्हे नं. चे एकूण क्षेत्र | | २४ ३२ |
| गावठाणाचे क्षेत्र | | ५ १८ |
| एकूण क्षेत्र . . | | २९ ५० |

परिशिष्ट-क

| मौजा दुर्गवाडा, ता. मोर्शी, जि. अमरावती येथील नगर भूमापनाचे हद्दीत समाविष्ट होणारे स. नं./ग. नं. ची यादी | | |
|--|--------------------|---------------|
| अ. क्र. | सर्व्हे नं./गट नं. | क्षेत्र |
| (१) | (२) | (३) हे. आर |
| १ | ३ | ९ ४८ |
| २ | ४ | ४ ९८ |
| ३ | ५ | १४ ४३ |
| ४ | ६ | ६ ६५ |
| ५ | ७ | ८ ९० |
| ६ | ८ | ११ ७७ |
| ७ | ९६ | ६ २९ |
| ८ | ९७ | ६ ११ |
| ९ | ९८ | ५ ९७ |
| एकूण . . | | ७४ ५८ |

सर्व्हे नं. चे एकूण क्षेत्र ७४ ५८
गावठाणाचे क्षेत्र ०
एकूण क्षेत्र . . ७४ ५८

| परिशिष्ट-ड | | | परिशिष्ट-ड-चालू | | |
|--|------------------|---------|-----------------|-----------------------------|--------|
| मौजा येरला, ता. मोर्शी, जि. अमरावती येथील नगर भूमापनाचे हद्दीत | | | (१) | (२) | (३) |
| समाविष्ट होणारे स. नं./ग. नं. ची यादी | | | | | हे. आर |
| अ. क्र. | आकारबंदाप्रमाणे | | ११ | १६२ | ८ ०५ |
| | सर्वे नं./गट नं. | क्षेत्र | १२ | १६३ | ६ ८६ |
| (१) | (२) | (३) | १३ | १६४ | ४ ७५ |
| | | हे. आर | १४ | १६५ पै. | १ २५ |
| १ | ४ | ५ २१ | १५ | १६६ पै. | ५ ४७ |
| २ | ६ | ४ ३५ | १६ | १६७ | ४ ४४ |
| ३ | ७ | १ ४८ | | | |
| ४ | १२ | ११ १८ | | एकूण | ९६ २६ |
| ५ | १३ | १० ८३ | | | |
| ६ | १४ | ६ ३६ | | | |
| ७ | १५ | १ ५८ | | सर्व्हे नं. चे एकूण क्षेत्र | ९६ २६ |
| ८ | १६ | ५ १४ | | गावठाणाचे क्षेत्र | ० |
| ९ | १७ | ११ ३३ | | | |
| १० | १६० | ७ ९८ | | एकूण क्षेत्र | ९६ २६ |

मोर्शी नगर भूमापन हद्दीत समाविष्ट होणा-या क्षेत्राचा एकत्रित गोषवारा

| अ. क्र. | गावाचे नाव | नगर भूमापन करावयाचे गावठाणाचे क्षेत्र | गावाचे गावठाणा बाहेरील नगर भूमापन करावयाचे क्षेत्र | नगर भूमापन करावयाचे एकूण क्षेत्र |
|---------|------------|---------------------------------------|--|----------------------------------|
| (१) | (२) | (३) | स. नं./ग. नं. क्षेत्र | (६) |
| | | हे. आर | हे. आर | हे. आर |
| १ | मोर्शी | ५५.४३ | ७७ | २०७ ६६ |
| २ | येरला | .. | १६ | १६ २६ |
| ३ | दुर्गवाडा | .. | ९ | ७४ ५८ |
| ४ | रसूलपूर | ५.१८ | ९ | २४ ३२ |
| | एकूण | ६० ६१ | .. | ४०२ ८२ |
| | | | | ४६३ ४३ |

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ६८७.

महाराष्ट्र जमीन महसूल अधिनियम, १९६६ चे कलम १२२

क्रमांक नमू २-नगर परिषद-फेरअधिसूचना-३३६३-२०१५.—

ज्याअर्थी जिल्हाधिकारी, अमरावती यांना मौजा चांदूर रेल्वे, ता. चांदूर रेल्वे, जि. अमरावती येथील मूळ गावठाण हद्दी बाहेरील काही गट नंबर/भूमापन क्रमांक ची जमीन मौजा चांदूर रेल्वे, ता. चांदूर रेल्वे, जि. अमरावती येथील महाराष्ट्र जमीन महसूल अधिनियम, १९६६ चे कलम १२६ अन्वये करावयाच्या नगर भूमापनासाठी गावठाणाच्या हद्दीत सामील करणे आवश्यक वाटते;

त्याअर्थी, जिल्हाधिकारी, अमरावती हे महाराष्ट्र जमीन महसूल अधिनियम, १९६६ खंड-१ कलम १२२ अन्वये प्राप्त अधिकारानुसार सोबतचे परिशिष्ट अ, मध्ये नमूद केलेले गट नंबर/भूमापन क्रमांक ची जमीन नगर भूमापन कामासाठी मौजा चांदूर रेल्वे, ता. चांदूर रेल्वे, जि. अमरावती या गावाचे गावठाण हद्दीत समाविष्ट करित आहे.

| परिशिष्ट-अ | | | परिशिष्ट-अ—चालू | | |
|--|---------|--------|-----------------|-----|--------|
| | | | (१) | (२) | (३) |
| मौजे चांदूर रेल्वे, प.ह.नं. २५, ता. चांदूर रेल्वे, जि. अमरावती येथील | | | | | हे. आर |
| चांदूर रेल्वे नगर भूमापनाचे हद्दीत समाविष्ट होणारे स. न. ची यादी | | | | | |
| अ. क्र. | | | | | |
| आकारबंदाप्रमाणे | | | | | |
| सर्वे नं./गट नं. | क्षेत्र | | | | |
| (१) | (२) | (३) | | | |
| | | हे. आर | | | |
| १ | १ | ० ७९ | ४२ | ४६ | १ ३७ |
| २ | २ | ५ २० | ४३ | ४७ | १ १३ |
| ३ | ३ | ० ७४ | ४४ | ४८ | २ ५५ |
| ४ | ४ | २ ०५ | ४५ | ४९ | ० ० |
| ५ | ५ | २ ८३ | ४६ | ५० | १ ५६ |
| ६ | ६ | २ ८० | ४७ | ५१ | १ ३७ |
| ७ | ११ | ० २५ | ४८ | ५२ | २ ०४ |
| ८ | १२ | ० ४३ | ४९ | ५३ | ० ९६ |
| ९ | १३ | ० ४२ | ५० | ५४ | ० ६७ |
| १० | १४ | २ ९६ | ५१ | ५५ | ० ६७ |
| ११ | १५ | ० २९ | ५२ | ५६ | ० ४० |
| १२ | १६ | २ ५४ | ५३ | ५७ | ० ३५ |
| १३ | १७ | ० ८८ | ५४ | ५८ | ० ५१ |
| १४ | १८ | १ २७ | ५५ | ५९ | ० ४६ |
| १५ | १९ | ४ १८ | ५६ | ६० | ० ६४ |
| १६ | २० | १ ४४ | ५७ | ६१ | ० ३६ |
| १७ | २१ | ४ ९० | ५८ | ६२ | ० ९३ |
| १८ | २२ | ६ ६४ | ५९ | ६३ | ० ७९ |
| १९ | २३ | ७ ०९ | ६० | ६४ | १ ४६ |
| २० | २४ | ७ ३३ | ६१ | ६५ | १ ०५ |
| २१ | २५ | ८ २५ | ६२ | ६६ | १ ११ |
| २२ | २६ | ९ १९ | ६३ | ६७ | ० ९६ |
| २३ | २७ | ३ ६० | ६४ | ६८ | ० ९४ |
| २४ | २८ | ० ८४ | ६५ | ६९ | २ ६६ |
| २५ | २९ | ५ ३२ | ६६ | ७० | १ ४२ |
| २६ | ३० | ४ ९६ | ६७ | ७२ | २ ८७ |
| २७ | ३१ | ० ४० | ६८ | ७३ | १ ५१ |
| २८ | ३२ | ९ ५५ | ६९ | ७४ | ० ७० |
| २९ | ३३ | ९ ५७ | ७० | ७५ | ३ ४३ |
| ३० | ३४ | ९ ३७ | ७१ | ७६ | १ ५६ |
| ३१ | ३५ | २ ७४ | ७२ | ७७ | ३ ०६ |
| ३२ | ३६ | ११ ०८ | ७३ | ७८ | १ १३ |
| ३३ | ३७ | ५ ३६ | ७४ | ७९ | ० ० |
| ३४ | ३८ | ५ ५१ | ७५ | ८० | ३ ५२ |
| ३५ | ३९ | ६ ५३ | ७६ | ८१ | १ ७९ |
| ३६ | ४० | १० ४७ | ७७ | ८६ | १ ४५ |

| परिशिष्ट-अ-चालू | | | परिशिष्ट-अ-चालू | | |
|-----------------|-----|--------|-----------------|------|--------|
| (१) | (२) | (३) | (१) | (२) | (३) |
| | | हे. आर | | | हे. आर |
| ७८ | ८७ | ४ ७० | ९३ | २५१ | ५ ८१ |
| ७९ | १५९ | ९ ५७ | ९४ | २५२ | ४ ६३ |
| ८० | १६० | ६ ५३ | ९५ | २५३ | ५ ४२ |
| ८१ | १७९ | ८ ६५ | ९६ | २५४ | ० ६५ |
| ८२ | १८० | ८ ४७ | ९७ | २५५ | २ ९५ |
| ८३ | १८१ | ९ ५१ | ९८ | २६० | १ ७७ |
| ८४ | १८२ | १४ ०८ | ९९ | २६१ | २ ६७ |
| ८५ | १८४ | ११ ५७ | १०० | ३४९ | ३ ७० |
| ८६ | १८५ | ९ ६५ | १०१ | ३५० | १ ४७ |
| ८७ | १९५ | ८ ९६ | १०२ | ३५१ | ० ०९ |
| ८८ | १९६ | ७ ७२ | १०३ | ३५२ | ३ १० |
| ८९ | २०८ | १ ०० | १०४ | ३५३ | ० ८५ |
| ९० | २०९ | ६ ४९ | १०५ | ३५४ | ० ०९ |
| ९१ | २४९ | ६ ५९ | | | |
| ९२ | २५० | ३ ५० | | एकूण | ३७३ ८४ |

चांदूर रेल्वे नगर भूमापन हद्दीत समाविष्ट होणा-या क्षेत्राचा एकत्रित गोषवारा

| अ. क्र. | गावाचे नाव | नगर भूमापन करावयाचे गावठाणाचे क्षेत्र | गावाचे गावठाणा बाहेरील नगर भूमापन करावयाचे क्षेत्र | नगर भूमापन करावयाचे एकूण क्षेत्र |
|---------|---------------|---------------------------------------|--|----------------------------------|
| (१) | (२) | (३) | (४) | (५) |
| | | हे. आर | स. नं./ग. नं. क्षेत्र | हे. आर |
| १ | चांदूर रेल्वे | ६३.२१ | १०५ | ३७३ ८४ |
| | एकूण | ६३.२१ | १०५ | ३७३ ८४ |

दिनांक १६ जून २०१५.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ६८८.

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्स्थापना करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३

क्रमांक प्र.अ.-भू.सं.-अ.का.-कावि ११६-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम ३ च्या खंड (इ) च्या परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना, महसूल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र.क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी, २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त अधिसूचना” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे असे अधिसूचीत केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमीन” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते. ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने बाधित व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमूद करावीत);

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर, या अनुसूचीमध्ये तपशील नमूद करावा).

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (४) अनुसार कोणतीही व्यक्ती ही अधिसूचना प्रसिध्द झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल;

परंतु, आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने, या तरतुदीचे बुध्दीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिल्या जाणार नाही.

तसेच उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार जिल्हाधिकारी भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त नियम” असा करण्यात आला आहे) यांच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमि अभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये समुचित शासन असलेला जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा (भूसंपादन), अधिकारी, चांदुर रेल्वे यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ११-४७-२०१४-२०१५.

गाव :-संग्रामपूर, तालुका-नांदगाव खंडेश्वर, जिल्हा-अमरावती.

| अ. क्र. | भूमापन क्रमांक किंवा गट नंबर | अंदाजित क्षेत्र | | |
|---------|------------------------------|---------------------|------------------|--------------|
| | | लागवड योग्य क्षेत्र | पोट खराब क्षेत्र | एकूण क्षेत्र |
| (१) | (२) | हे. आर | हे. आर | हे. आर |
| १ | १४/१ | ० १६ | ० ०१ | ० १७ |
| २ | १४/२ | ० १९ | . . | ० १९ |
| ३ | १४/३ | ० ३८ | ० ०१ | ० ३९ |
| ४ | १९/१ | ० १९ | . . | ० १९ |
| ५ | २०/१ | ० १७ | . . | ० १७ |
| ६ | २०/१अ | ० ०७ | . . | ० ०७ |
| ७ | २१/२ | ० ०५ | . . | ० ०५ |
| एकूण | | . . १ २१ | ० ०२ | १ २३ |

अनुसूची-दोन**सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण**

| | |
|------------------------|--|
| प्रकल्पाचे नाव | :— चांदी नदी प्रकल्प. |
| प्रकल्प कार्याचे वर्णन | :— संग्रामपूर चांदी नदी प्रकल्पाच्या मुख्य कालव्यावरील संग्रामपूर वितरीकेच्या बांधकामासाठी (धरण व बुडीत क्षेत्र). |
| समाजाला मिळणारे लाभ | :— या प्रकल्पाअंतर्गत एकूण १८३५ हे. जमिनीस पाणी पुरवठा होईल व १४.८१ द.ल.घ.मी. पाणीसाठी निर्माण होईल. पाणी पुरवठ्याचे सार्वजनिक प्रयोजन, समाजाला, राष्ट्रीय संपत्तीत वाढ, मत्स्य व्यवसाय, पशुसंवर्धनामध्ये वाढ, कुटीर उद्योगास फायदा व रोजगार निर्मिती सामाजिक फायदे होवून त्यायोगे सार्वजनिक हित जपल्या जाणार आहे. |

अनुसूची तीन

| | |
|---------------------------|--|
| बाधित व्यक्तींचे विस्थापन | :— विस्थापनाची आवश्यकता नाही. सबब, माहिती निरंक. |
| करण्यास भाग पाडणारी कारणे | |

अनुसूची चार**पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश**

सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) : महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग-४ अ, महसूल व वन विभाग, मुंबई दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची पाच**नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील**

| | |
|---|--------------------------------------|
| (अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-याचे पदनाम | :— प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही. |
| (ब) प्रशासनाच्या कार्यालयाचा पत्ता | :— निरंक |
| (क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे | :— निरंक |
| त्या अधिसूचनेचा तपशील | |

टीप :— उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदुर रेल्वे यांच्या कार्यालयात निरीक्षण करता येईल.

दिनांक २० मार्च २०१५.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ६८९.

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहता करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३

क्रमांक प्र.अ.-भू.सं.-अ.का.-कावि ११७-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम ३ च्या खंड (इ) च्या परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकारांचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना, महसूल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र.क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी, २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त अधिसूचना” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे असे अधिसूचीत केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमीन” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते. ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने बाधित व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमूद करावीत);

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर, या अनुसूचीमध्ये तपशील नमूद करावा).

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (४) अनुसार कोणतीही व्यक्ती ही अधिसूचना प्रसिध्द झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल.

परंतु, आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने, या तरतुदीचे बुध्दीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिल्या जाणार नाही.

तसेच उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार जिल्हाधिकारी भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त नियम” असा करण्यात आला आहे) याच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमि अभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये समुचित शासन असलेला जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ९-४७-२०१४-२०१५

गाव जावरा मोळवण, तालुका नांदगाव खंडेश्वर, जिल्हा अमरावती

| अ. क्र. | भूमापन क्रमांक किंवा गट नंबर | अंदाजित क्षेत्र | | |
|---------|------------------------------|---------------------|------------------|--------------|
| | | लागवड योग्य क्षेत्र | पोट खराब क्षेत्र | एकूण क्षेत्र |
| (१) | (२) | हे. आर | हे. आर | हे. आर |
| १ | ७५/१ | ० ०५ | .. | ० ०५ |
| २ | ७५/२ पैकी | ० १४ | .. | ० १४ |
| ३ | ७५/३ | ० १३ | .. | ० १३ |
| ४ | ७७/२ | ० ०३ | .. | ० ०३ |
| ५ | ७४/१ | ० २० | .. | ० २० |
| ६ | ७८/२ | ० ०४ | .. | ० ०४ |
| ७ | ७८/२अ | ० १८ | .. | ० १८ |
| ८ | १८/२ | ० १५ | .. | ० १५ |
| ९ | १८/१ | ० ३८ | .. | ० ३८ |
| १० | २०/१अ | ० ०६ | .. | ० ०६ |
| ११ | २०/१क | ० १० | .. | ० १० |
| १२ | २०/१ब | ० ०७ | .. | ० ०७ |
| १३ | २०/२ | ० ०८ | .. | ० ०८ |
| १४ | ११/१ | ० १४ | .. | ० १४ |

अनुसूची-एक- चालू

| (१) | (२) | हे. आर | हे. आर | हे. आर |
|------|---------|--------|--------|--------|
| १५ | १२/१ | ० ०६ | .. | ० ०६ |
| १६ | १२/२ | ० १४ | .. | ० १४ |
| १७ | १२/३ | ० १६ | .. | ० १६ |
| १८ | १२/३अ | ० ०८ | .. | ० ०८ |
| १९ | १२/३ब | ० १३ | .. | ० १३ |
| २० | १३/१ | ० १४ | .. | ० १४ |
| २१ | १३/२ | ० १२ | .. | ० १२ |
| २२ | १३/३ | ० १६ | .. | ० १६ |
| २३ | ७०/१ | ० १९ | .. | ० १९ |
| २४ | ७१/१ | ० २६ | .. | ० २६ |
| २५ | ५/१ | ० २७ | .. | ० २७ |
| २६ | ३३ पैकी | ० ०६ | .. | ० ०६ |
| २७ | ३३ पैकी | ० ०८ | .. | ० ०८ |
| २८ | ३३ पैकी | ० ०५ | .. | ० ०५ |
| २९ | २४/१ | ० ३३ | .. | ० ३३ |
| ३० | ६३/१ब | ० १७ | .. | ० १७ |
| ३१ | २६/१ | ० ०५ | .. | ० ०५ |
| ३२ | ६४/१ | ० ३५ | .. | ० ३५ |
| ३३ | ६७ | ० ०८ | .. | ० ०८ |
| ३४ | ६७ पैकी | ० ११ | .. | ० ११ |
| ३५ | ६७ पैकी | ० ११ | .. | ० ११ |
| ३६ | ६७ पैकी | ० १० | .. | ० १० |
| ३७ | ६७ पैकी | ० १५ | .. | ० १५ |
| ३८ | ६८/२ | ० ४४ | .. | ० ४४ |
| ३९ | ६८/३ | ० ३० | .. | ० ३० |
| ४० | ६९/१ | ० २० | .. | ० २० |
| ४१ | ६९/१अ | ० ०१ | .. | ० ०१ |
| ४२ | ६९/२ | ० १८ | .. | ० १८ |
| एकूण | | ६ २३ | .. | ६ २३ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

| | |
|------------------------|---|
| प्रकल्पाचे नाव | :— चांदी नदी प्रकल्प. |
| प्रकल्प कार्याचे वर्णन | :— चांदी नदी प्रकल्पाच्या मुख्य कालव्यावरील जावळा मोळवण लघु क्र. १, २ व उप लघु कालवा क्र. ३ च्या बांधकामासाठी (धरण व बुडीत क्षेत्र). |
| समाजाला मिळणारे लाभ | :— या प्रकल्पांतर्गत एकूण १८३५ हे. जमिनीस पाणीपुरवठा होईल व १४.८१ द.ल.घ.मी. पाणीसाठी निर्माण होईल. पाणीपुरवठ्याचे सार्वजनिक प्रयोजन, समाजाच्या राष्ट्रीय संपत्तीत वाढ, मत्स्यव्यवसाय, पशुसंवर्धनामध्ये वाढ, कुटीर उद्योगास फायदा व रोजगार निर्मिती सामाजिक फायदे होवून त्यायोगे सार्वजनिक हित जपल्या जाणार आहे. |

अनुसूची तीन

बाधित व्यक्तींचे विस्थापन :- विस्थापनाची आवश्यकता नाही. सबब, माहिती निरंक.
करण्यास भाग पाडणारी कारणे

अनुसूची चार**पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश**

सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) : महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग-४ अ, महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची पाच**नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील**

- (अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-याचे पदनाम :- प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.
(ब) प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता :- निरंक
(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे :- निरंक
त्या अधिसूचनेचा तपशील

टीप :- उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांच्या कार्यालयात निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ६९०.

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्स्थापना करतांना वाजवी भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३

क्रमांक प्र.अ.-भू.सं.-अ.का.-कावि ११८-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम ३ च्या खंड (इ) च्या परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकारांचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना, महसूल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र.क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी, २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त अधिसूचना” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमीन” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते. ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने बाधित व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमूद करावीत);

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर, या अनुसूचीमध्ये तपशील नमूद करावा).

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (४) अनुसार कोणतीही व्यक्ती ही अधिसूचना प्रसिध्द झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल.

परंतु आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने, या तरतुदीचे बुध्दीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिल्या जाणार नाही.

तसेच उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार जिल्हाधिकारी भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्यांचा निर्देश “उक्त नियम” असा करण्यात आला आहे) याच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमी अभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये समुचित शासन असलेला जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ४-४७-२०१४-२०१५
गाव कणी मिर्झापूर, तालुका नांदगाव खंडेश्वर, जिल्हा अमरावती

| अ. क्र. | भूमापन क्रमांक किंवा गट नंबर | अंदाजित क्षेत्र | | |
|---------|------------------------------|---------------------|------------------|--------------|
| | | लागवड योग्य क्षेत्र | पोट खराब क्षेत्र | एकूण क्षेत्र |
| (१) | (२) | हे. आर | हे. आर | हे. आर |
| | | | (३) | |
| १ | १७५/२ पैकी | ० १५ | .. | ० १५ |
| २ | १७५/२ पैकी | ० ४० | .. | ० ४० |
| ३ | .. | ० ०१ | .. | ० ०१ |
| ४ | १७६ | ० १३ | .. | ० १३ |
| ५ | १४१/२ | ० १० | .. | ० १० |
| ६ | १४१/१ | ० ०४ | .. | ० ०४ |
| ७ | १५४/१ | ० ४८ | .. | ० ४८ |
| ८ | १५४/२ | ० १९ | .. | ० १९ |
| ९ | १५४/३ | ० ०९ | .. | ० ०९ |
| १० | १२४ | ० ५८ | .. | ० ५८ |
| ११ | १४५ पैकी | ० ३४ | .. | ० ३४ |
| १२ | १४५ पैकी | ० ०७ | .. | ० ०७ |
| १३ | १४७ | ० ३४ | .. | ० ३४ |
| १४ | १४६ | ० २६ | .. | ० २६ |
| १५ | १४८ | ० १७ | .. | ० १७ |
| १६ | १४९ | ० ०१ | .. | ० ०१ |
| १७ | ५६/२ | ० १३ | .. | ० १३ |
| १८ | ५५ | ० २७ | .. | ० २७ |
| १९ | ५५ | ० १७ | .. | ० १७ |
| २० | ५४/१ पैकी | ० २५ | .. | ० २५ |
| २१ | ५४/१ पैकी | ० २० | .. | ० २० |
| २२ | ५७ | ० २५ | .. | ० २५ |
| २३ | ५७ | ० १८ | .. | ० १८ |

अनुसूची-एक—चालू

| (१) | (२) | हे. आर | (३) | हे. आर | हे. आर |
|-----|----------|--------|-----|--------|--------|
| २४ | ८१ | ० ३९ | .. | ० ३९ | |
| २५ | .. | ० ०१ | .. | ० ०१ | |
| २६ | १२८ | ० २७ | .. | ० २७ | |
| २७ | ७७/२ | ० २३ | .. | ० २३ | |
| २८ | ७६ | ० ४० | .. | ० ४० | |
| २९ | ८७ | ० २५ | .. | ० २५ | |
| ३० | ४१ पैकी | ० १४ | .. | ० १४ | |
| ३१ | ४३/१ | ० ४७ | .. | ० ४७ | |
| ३२ | ४३/१० | ० ०६ | .. | ० ०६ | |
| ३३ | ७२ | ० ०७ | .. | ० ०७ | |
| ३४ | ७३ | ० २४ | .. | ० २४ | |
| ३५ | ७१ | ० ०७ | .. | ० ०७ | |
| ३६ | ७० | ० ५५ | .. | ० ५५ | |
| ३७ | ८४ पैकी | ० २० | .. | ० २० | |
| ३८ | ८४ पैकी | ० ०९ | .. | ० ०९ | |
| ३९ | १३९/४ | ० ११ | .. | ० ११ | |
| ४० | १३९/२ | ० ११ | .. | ० ११ | |
| ४१ | १३९/३ | ० ३८ | .. | ० ३८ | |
| ४२ | १२७ | ० २१ | .. | ० २१ | |
| ४३ | १२५ पैकी | ० २७ | .. | ० २७ | |
| ४४ | ११९ | ० ३५ | .. | ० ३५ | |
| ४५ | १२० | ० २६ | .. | ० २६ | |
| ४६ | १२० पैकी | ० २५ | .. | ० २५ | |
| ४७ | १२० पैकी | ० ११ | .. | ० ११ | |
| ४८ | १०९ | ० १९ | .. | ० १९ | |
| ४९ | १०८ पैकी | ० १० | .. | ० १० | |
| ५० | १०८ पैकी | ० ०८ | .. | ० ०८ | |
| ५१ | १०७ पैकी | ० ०८ | .. | ० ०८ | |
| ५२ | १०७ पैकी | ० ०७ | .. | ० ०७ | |
| ५३ | १०७ पैकी | ० ०७ | .. | ० ०७ | |
| ५४ | १०६ | ० ०९ | .. | ० ०९ | |
| ५५ | ११७ | ० ६१ | .. | ० ६१ | |
| ५६ | १७७ पैकी | ० ३२ | .. | ० ३२ | |
| ५७ | १४० | ० १९ | .. | ० १९ | |
| ५८ | १७५/१ | ० १३ | .. | ० १३ | |
| ५९ | १५६/२ | ० ३५ | .. | ० ३५ | |
| ६० | १५८ | ० २८ | .. | ० २८ | |
| ६१ | १६०/१ | ० ३७ | .. | ० ३७ | |

एकूण

.. १३ २३

..

१३ २३

अनुसूची-दोन**सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण**

| | |
|------------------------|---|
| प्रकल्पाचे नाव | :— चांदी नदी प्रकल्प. |
| प्रकल्प कार्याचे वर्णन | :— चांदी नदी प्रकल्पाच्या मुख्य कालव्यावरील कणी मिर्झापूर लघु कालवा क्र. १, २ व एकलासपूर लघु कालवा, संग्रामपूर वितरीका पाचोड लघु कालवाच्या बांधकामासाठी (धरण व बुडीत क्षेत्र) |
| समाजाला मिळणारे लाभ | :— या प्रकल्पा अंतर्गत एकूण १८३५ हे. जमिनीस पाणी पुरवठा होईल व १४.८१ द.ल.घ.मी. पाणीसाठा निर्माण होईल. पाणीपुरवठ्याचे सार्वजनिक प्रयोजन, समाजाच्या राष्ट्रीय संपत्तीत वाढ, मत्स्यव्यवसाय पशुसंवर्धनामध्ये वाढ, कुटीर उद्योगास फायदा व रोजगार निर्मिती सामाजिक फायदे होवून त्यायोगे सार्वजनिक हित जपल्या जाणार आहे. |

अनुसूची तीन

| | |
|---------------------------|--|
| बाधित व्यक्तींचे विस्थापन | :— विस्थापनाची आवश्यकता नाही. सबब, माहिती निरंक. |
| करण्यास भाग पाडणारी कारणे | |

अनुसूची चार**पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश**

सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) : महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग-४ अ, महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची पाच**नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील**

| | |
|---|--------------------------------------|
| (अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-याचे पदनाम | :— प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही. |
| (ब) प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता | :— निरंक |
| (क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे | :— निरंक |
| त्या अधिसूचनेचा तपशील | |

टीप :— उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांच्या कार्यालयात निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ६९१.

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना वाजवी भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३

क्रमांक प्र.अ.-भू.सं.-अ.का.-कावि ११९-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम ३ च्या खंड (इ) च्या परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकारांचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना, महसूल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र.क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी, २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “ उक्त अधिसूचना ” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड ए) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमीन” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते. ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे.

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाचे कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने बाधित व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमूद करावीत);

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर, या अनुसूचीमध्ये तपशील नमूद करावा).

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (४) अनुसार कोणतीही व्यक्ती ही अधिसूचना प्रसिध्द झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल.

परंतु आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने, या तरतुदीचे बुध्दीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिल्या जाणार नाही.

तसेच उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार जिल्हाधिकारी भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त नियम” असा करण्यात आला आहे) याच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमी अभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये समुचित शासन असलेला जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ६-४७-२०१४-२०१५

गाव एकलासपूर, तालुका नांदगाव खंडेश्वर, जिल्हा अमरावती

| अ. क्र. | भूमापन क्रमांक किंवा गट नंबर | अंदाजित क्षेत्र | | |
|---------|------------------------------|---------------------|------------------|--------------|
| | | लागवड योग्य क्षेत्र | पोट खराब क्षेत्र | एकूण क्षेत्र |
| (१) | (२) | हे. आर | (३) हे. आर | हे. आर |
| १ | २१/१अ | ० २७ | .. | ० २७ |
| २ | २२ | ० १९ | .. | ० १९ |
| ३ | २४ पैकी | ० २९ | .. | ० २९ |
| ४ | २४ पैकी | ० ३४ | .. | ० ३४ |
| ५ | २४ पैकी | ० ३२ | .. | ० ३२ |
| ६ | ३२ | ० १७ | .. | ० १७ |

अनुसूची-एक—चालू

| (१) | (२) | हे. आर | (३) | हे. आर |
|------|---------|---------|--------|--------|
| | | हे. आर | हे. आर | हे. आर |
| ७ | ३१ | ० १६ | .. | ० १६ |
| ८ | ३० | ० ०८ | .. | ० ०८ |
| ९ | २७ पैकी | ० ३६ | .. | ० ३६ |
| १० | १३ | ० ०२ | .. | ० ०२ |
| ११ | १२ | १ २० | .. | १ २० |
| १२ | ६ | ० ०१ | .. | ० ०१ |
| एकूण | | .. ३ ४१ | .. | ३ ४१ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

| | |
|------------------------|--|
| प्रकल्पाचे नाव | :—चांदी नदी प्रकल्प. |
| प्रकल्प कार्याचे वर्णन | :—चांदी नदी प्रकल्पाच्या मुख्य कालव्यावरील एकलासपूर लघु कालवा संग्रामपूर वितरीका व पाचोड लघु कालवा क्र. १ च्या बांधकामासाठी (धरण व बुडीत क्षेत्र). |
| समाजाला मिळणारे लाभ | :— या प्रकल्पा अंतर्गत एकूण १८३५ हे. जमिनीस पाणीपुरवठा होईल व १४.८१ द.ल.घ.मी. पाणीसाठा निर्माण होईल. पाणीपुरवठ्याचे सार्वजनिक प्रयोजन, समाजाच्या राष्ट्रीय संपत्तीत वाढ, मत्स्यव्यवसाय पशुसंवर्धनामध्ये वाढ, कुटीर उद्योगास फायदा व रोजगार निर्मिती सामाजिक फायदे होवून त्यायोगे सार्वजनिक हित जपल्या जाणार आहे. |

अनुसूची तीन

| | |
|---------------------------|--|
| बाधित व्यक्तींचे विस्थापन | :— विस्थापनाची आवश्यकता नाही. सबब, माहिती निरंक. |
| करण्यास भाग पाडणारी कारणे | |

अनुसूची चार

पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश

सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अधिकरणाने दिलेला) : महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग-४ अ, महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

| | |
|---|--|
| (अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-याचे पदनाम | :— प्रशासकीय नियुक्तीची आवश्यकता नाही. |
| (ब) प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता | :— निरंक |
| (क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे | :— निरंक |
| त्या अधिसूचनेचा तपशील | |

टीप :— उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांच्या कार्यालयात निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ६९२

**भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्स्थापना करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा
हक्क अधिनियम, २०१३**

क्रमांक प्र.अ.-भूसं-अ.का.-कावि-१२०-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम ३ च्या खंड (इ) परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना महसूल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त अधिसूचना” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड-अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमीन” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन” असा केला आहे.) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते (ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे);

आणि म्हणून उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने बाधीत व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमूद करावीत.);

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकांचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर या अनुसूचीमध्ये तपशील नमूद करावा.);

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम ४ नुसार कोणतीही व्यक्ती, ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण-चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही :

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल;

परंतु आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिली जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (५) नुसार जिल्हाधिकारी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त नियम” असा करण्यात आला आहे) यांच्या नियम १० च्या उपनियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमिअभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करित आहे.

आणि, म्हणून त्याअर्थी उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये, समुचित शासन असलेले जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांना पदनिर्देशित करित आहेत.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ३-४७-२०१४-२०१५, गाव :-मंगरुळ चव्हाळा, तालुका नांदगाव खंडेश्वर, जिल्हा अमरावती

| अ. क्र. | भूमापन क्रमांक किंवा गट नंबर | अंदाजित क्षेत्र | | |
|---------|------------------------------|---------------------|------------------|--------------|
| | | लागवड योग्य क्षेत्र | पोट खराब क्षेत्र | एकूण क्षेत्र |
| (१) | (२) | (३) | | |
| | | हे. आर | | हे. आर |
| १ | ९५ | ० ०६ | | ० ०६ |
| २ | १०६ | ० १५ | | ० १५ |
| ३ | १०५ | ० २० | | ० २० |
| ४ | ९७ | ० १८ | | ० १८ |
| ५ | ९८ | ० ३० | | ० ३० |
| ६ | ९९ | ० २५ | | ० २५ |
| ७ | ९२ पैकी } ९२ पैकी } | ० २८ | | ० २८ |
| ८ | ९३ | ० १३ | | ० १३ |
| ९ | ८३ | ० २७ | | ० २७ |
| | एकूण | ० १ ८२ | | १ ८२ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

| | |
|------------------------|--|
| प्रकल्पाचे नाव | :— चांदी नदी प्रकल्प |
| प्रकल्प कार्याचे वर्णन | :— चांदी नदी प्रकल्पाच्या मुख्य कालव्यावरील संग्रामपुर अंत्य लघु कालव्याच्या बांधकामासाठी. (धरण व बुडीत क्षेत्र) |
| समाजाला मिळणारे लाभ | :— या प्रकल्पा अंतर्गत एकूण १८३५ हे. जमिनीस पाणी पुरवठा होईल व १४.८१ द.ल.घ.मी पाणीसाठी निर्माण होईल. पाणी पुरवठ्याचे सार्वजनिक प्रयोजन, समाजाला राष्ट्रीय संपत्तीत वाढ, मत्स्य व्यवसाय पशुसंवर्धनामध्ये वाढ, कुटीर उद्योगास फायदा व रोजगार निर्मिती सामाजिक फायदे होवून त्यायोगे सार्वजनिक हित जपल्या जाणार आहे. |

अनुसूची-तीन

| | |
|-------------------------------------|---|
| बाधित व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास : | विस्थापनाची आवश्यकता नाही सबब माहिती निरंक. |
| भाग पाडणारी कारणे | |

अनुसूची-चार

पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश

| | |
|---|---|
| सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) : | महाराष्ट्र शासन राजपत्र, असाधारण, भाग ४-अ, महसूल व वन विभाग, मुंबई दिनांक १३ मार्च २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सुट देण्यात आली आहे. |
|---|---|

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील.—

- (अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात :— प्रशासकीय नियुक्तीची आवश्यकता नाही.
आलेल्या अधिका-याचे पदनाम
- (ब) प्रशासनाच्या कार्यालयाचा पत्ता :— निरंक
- (क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची :— निरंक
नियुक्ती करण्यात आली आहे त्या
अधिसूचनेचा तपशील.

टीप :- उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांच्या कार्यालयात निरीक्षण करता येईल.

दिनांक २६ मार्च २०१५.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ६९३

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्स्थापना करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३

क्रमांक प्र.अ.-भू.सं-अ.का.-कावि-१३१-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम ३ च्या खंड (इ) परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना महसूल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त अधिसूचना” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड-अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमीन” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन” असा केला आहे.) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते (ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे);

आणि म्हणून उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने बाधीत व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमूद करावीत.);

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकांचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर या अनुसूचीमध्ये तपशिल नमूद करावा.);

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम ४ नुसार कोणतीही व्यक्ती, ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण-चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही :

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल;

परंतु आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिली जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (५) नुसार जिल्हाधिकारी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “ उक्त नियम ” असा करण्यात आला आहे) यांच्या नियम १० च्या उपनियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमिअभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करीत आहे.

आणि, म्हणून त्याअर्थी उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये, समुचित शासन असलेले जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांना पदनिर्देशित करीत आहेत.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक १-४७-२०१४-२०१५, गाव :- वडाळा, तालुका नांदगाव खंडेश्वर, जिल्हा अमरावती

| अ. क्र. | भूमापन क्रमांक किंवा गट नंबर | अंदाजित क्षेत्र | | |
|---------|---------------------------------|---------------------|------------------|--------------|
| | | लागवड योग्य क्षेत्र | पोट खराब क्षेत्र | एकूण क्षेत्र |
| (१) | (२) | (३) | | |
| | | हे. आर | | हे. आर |
| १ | १०/१ | ० ४० | | ० ४० |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

| | |
|-----------------------|--|
| प्रकल्पाचे नाव | :— चांदी नदी प्रकल्प |
| प्रकल्पकार्याचे वर्णन | :— चांदी नदी प्रकल्पाच्या बुडीत क्षेत्राकरीता (धरण व बुडीत क्षेत्र) |
| समाजाला मिळणारे लाभ | :— या प्रकल्पा अंतर्गत एकूण १८३५ हे. जमिनीस पाणीपुरवठा होईल व १४.८१ द.ल.घ.मी पाणीसाठा निर्माण होईल. पाणी पुरवठ्याचे सार्वजनिक प्रयोजन, समाजाला राष्ट्रीय संपत्तीत वाढ, मत्स्य व्यवसाय, पशुसंवर्धनामध्ये वाढ, कुटीर उद्योगास फायदा व रोजगार निर्मीती सामाजिक फायदे होवून त्यायोगे सार्वजनिक हित जपल्या जाणार आहे. |

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास :— विस्थापनाची आवश्यकता नाही सबब माहिती निरंक
भाग पाडणारी कारणे

अनुसूची-चार

पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश

सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सांराश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :— महाराष्ट्र शासन राजपत्र, असाधारण, भाग ४-अ, महसूल व वनविभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील.—

| | | |
|---|----|----------------------------------|
| (अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-याचे पदनाम | :— | प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही |
| (ब) प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता | :— | निरंक |
| (क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे त्या अधिसूचनेचा तपशील | :— | निरंक |

टीप :— उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांचे कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ६९४

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्स्थापना करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा

हक्क अधिनियम, २०१३

क्रमांक प्र.अ.-भू.सं-अ.का.-कावि-१३२-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम ३ च्या खंड (इ) परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना महसूल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त अधिसूचना” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड-अे) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमीन” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन” असा केला आहे.) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते (ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे);

आणि म्हणून उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने बाधीत व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमूद करावीत.);

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकांचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर या अनुसूचीमध्ये तपशील नमूद करावा.);

अ-एक-६-(१५७०).

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम ४ नुसार कोणतीही व्यक्ती, ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण-चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही :

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल;

परंतु आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिली जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (५) नुसार जिल्हाधिकारी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त नियम ” असा करण्यात आला आहे) याच्या नियम १० च्या उपनियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमिअभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करीत आहे.

आणि, म्हणून त्याअर्थी उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये, समुचित शासन असलेले जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांना पदनिर्देशित करीत आहेत.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक २५-४७-२०१४-२०१५, गाव :- कवठा कडु, तालुका चांदूर रेल्वे, जिल्हा अमरावती

| अ. क्र. | भूमापन क्रमांक किंवा गट नंबर | अंदाजित क्षेत्र | | |
|---------|---------------------------------|---------------------|------------------|--------------|
| | | लागवड योग्य क्षेत्र | पोट खराब क्षेत्र | एकूण क्षेत्र |
| (१) | (२) | (३) | | |
| | | हे. आर | | हे. आर |
| १ | ५३ | १ ०४ | - | १ ०४ |
| २ | ५४ | २ ७२ | - | २ ७२ |
| ३ | ५५ | २ ४२ | - | २ ४२ |
| ४ | ५६ | २ ०० | - | २ ०० |
| ५ | ५७ | १ ०५ | - | १ ०५ |
| ६ | ७०/१ | ० ११ | - | ० ११ |
| ७ | ७०/२ | ० ४४ | - | ० ४४ |
| ८ | ७०/३ | २ ७६ | - | २ ७६ |
| ९ | ७०/४ | १ ४१ | - | १ ४१ |
| | एकूण | १३ ९५ | | १३ ९५ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नाव :— रायगड नदी प्रकल्प

प्रकल्पकार्याचे वर्णन :— रायगड प्रकल्पाच्या धरणाचे बांधकामासाठी

(धरण व बुडीत क्षेत्र)

समाजाला मिळणारे लाभ :— या प्रकल्पा अंतर्गत एकूण ८ गावांना सिंचनासाठी पाणी, पिण्याच्या पाण्याची उपलब्धता, औद्योगिक वसाहतीसाठी पाणी पुरवठ्याचे सार्वजनिक प्रयोजन, समाजाला राष्ट्रीय संपत्तीत वाढ, मत्स्य व्यवसाय, पशुसंवर्धनामध्ये वाढ, कुटीर उद्योगास फायदा व रोजगार निर्मीती तसेच १५७०.०० हे. आर. जमीन सिंचनाचा लाभ हे सामाजिक फायदे होवून त्यायोगे सार्वजनिक हित जपल्या जाणार आहे.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास :— विस्थापनाची आवश्यकता नाही सबब माहिती निरंक
भाग पाडणारी कारणे

अनुसूची-चार

पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश

सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :— महाराष्ट्र शासन राजपत्र, असाधारण, भाग ४-अ, महसूल व वनविभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील.—

| | | |
|---|----|----------------------------------|
| (अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-याचे पदनाम | :— | प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही |
| (ब) प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता | :— | निरंक |
| (क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे | :— | निरंक |
| त्या अधिसूचनेचा तपशील | | |

टीप :— उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांचे कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ६९५

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा

हक्क अधिनियम, २०१३

क्रमांक प्र.अ.-भू.सं-अ.का.-कावि-१३३-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम ३ च्या खंड (इ) परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना महसूल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त अधिसूचना” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड-अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमीन” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन” असा केला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते (ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे);

आणि म्हणून उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने बाधीत व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमूद करावीत.);

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकांचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर या अनुसूचीमध्ये तपशिल नमूद करावा.);

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम ४ नुसार कोणतीही व्यक्ती, ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण-चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही :

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल;

परंतु आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिली जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (५) नुसार जिल्हाधिकारी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “ उक्त नियम ” असा करण्यात आला आहे) यांच्या नियम १० च्या उपनियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमिअभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करित आहे.

आणि, म्हणून त्याअर्थी उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये, समुचित शासन असलेले जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांना पदनिर्देशित करित आहेत.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ८-४७-२०१४-२०१५, गाव :- पाचोड, तालुका नांदगाव खंडेश्वर, जिल्हा अमरावती

| अ. क्र. | भूमापन क्रमांक किंवा गट नंबर | अंदाजित क्षेत्र | | |
|---------|---------------------------------|---------------------|------------------|--------------|
| | | लागवड योग्य क्षेत्र | पोट खराब क्षेत्र | एकूण क्षेत्र |
| (१) | (२) | हे. आर | (३) | हे. आर |
| १ | ५९ पैकी. | ० १९ | - | ० १९ |
| २ | ६० | ० ०८ | - | ० ०८ |
| ३ | ६१ | ० ०८ | - | ० ८ |
| ४ | ५८ पैकी | ० १४ | - | ० १४ |
| ५ | ५८ पैकी | ० ०७ | - | ० ०७ |
| ६ | ५८ पैकी | ० ०७ | - | ० ०७ |
| ७ | ५१ | ० ०९ | - | ० ०९ |
| ८ | ५१ पैकी | ० १० | - | ० १० |
| ९ | ५२ | ० ३० | - | ० ३० |
| १० | ४६ | ० २८ | - | ० २८ |
| ११ | १५ | ० १५ | - | ० १५ |
| १२ | १६ | ० १९ | - | ० १९ |

अनुसूची-एक-चालू

| (१) | (२) | हे. आर | (३) | हे. आर |
|------|---------|--------|-----|--------|
| १३ | १७ | ० १७ | - | ० १७ |
| १४ | १९ | ० २७ | - | ० २७ |
| १५ | २० | ० २३ | - | ० २३ |
| १६ | २१ | ० ७८ | - | ० ७८ |
| १७ | ३० | ० १६ | - | ० १६ |
| १८ | ३१ | ० १७ | - | ० १७ |
| १९ | २९ पैकी | ० १३ | - | ० १३ |
| २० | ८४ पैकी | ० ७२ | - | ० ७२ |
| २१ | ८५ पैकी | ० ५१ | - | ० ५१ |
| २२ | ८६ | ० २० | - | ० २० |
| २३ | ७८ पैकी | ० ४२ | - | ० ४२ |
| २४ | ७९ पैकी | ० ११ | - | ० ११ |
| २५ | ७९ पैकी | ० १४ | - | ० १४ |
| २६ | ८१ पैकी | ० ०४ | - | ० ०४ |
| २७ | ८२ पैकी | ० ०५ | - | ० ०५ |
| २८ | ८२ पैकी | ० ०६ | - | ० ०६ |
| २९ | ८३ | ० १० | - | ० १० |
| ३० | २४ | ० १५ | - | ० १५ |
| एकूण | | ६ १५ | | ६ १५ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

| | | |
|-----------------------|----|---|
| प्रकल्पाचे नाव | :— | चांदी नदी प्रकल्प |
| प्रकल्पकार्याचे वर्णन | :— | पाचोड, चांदी नदी प्रकल्पाच्या मुख्य कालव्याच्या बांधकामासाठी (धरण व बुडीत क्षेत्र) |
| समाजाला मिळणारे लाभ | :— | या प्रकल्पा अंतर्गत एकूण ८ गावांना सिंचनासाठी पाणी, पिण्याच्या पाण्याची उपलब्धता, औद्योगिक वसाहतीसाठी पाणी पुरवठ्याचे सार्वजनिक प्रयोजन, समाजाला राष्ट्रीय संपत्तीत वाढ, मत्स्य व्यवसाय पशुसंवर्धनामध्ये वाढ, कुटीर उद्योगास फायदा व रोजगार निर्मिती तसेच १५७०.०० हे. आर. जमीन सिंचनाचा लाभ हे सामाजिक फायदे होवून त्यायोगे सार्वजनिक हित जपल्या जाणार आहे. |

अनुसूची-तीन

| | | |
|-----------------------------------|----|--|
| बाधित व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास | :— | विस्थापनाची आवश्यकता नाही सबब माहिती निरंक |
| भाग पाडणारी कारणे | | |

अनुसूची-चार

(पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश)

सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :— महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग ४ अ, महसूल व वनविभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सुट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

| | | |
|---|----|-----------------------------------|
| (अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-याचे पदनाम | :— | प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही. |
| (ब) प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता | :— | निरंक |
| (क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे त्या अधिसूचनेचा तपशील | :— | निरंक |

टीप :— उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांचे कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

दिनांक १८ एप्रिल २०१५.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ६९६

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्स्थापना करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा

हक्क अधिनियम, २०१३

क्रमांक प्र.अ.-भू.सं-अ.का.-कावि-१३५-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम ३ च्या खंड (इ) परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना महसूल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त अधिसूचना” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड-अे) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमीन” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन” असा केला आहे.) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते (ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे);

आणि म्हणून उक्त अधिनियमाचे कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने बाधीत व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमूद करावीत.);

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर या अनुसूचीमध्ये तपशील नमूद करावा.);

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम ४ नुसार कोणतीही व्यक्ती, ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण-चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही :

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल;

परंतु आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिली जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (५) नुसार जिल्हाधिकारी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त नियम” असा करण्यात आला आहे) यांच्या नियम १० च्या उपनियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमिअभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करीत आहे.

आणि, म्हणून त्याअर्थी उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये, समुचित शासन असलेले जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांना पदनिर्देशित करीत आहेत.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरणा क्रमांक ३०-४७-२०१४-२०१५, गाव दिघी कोल्हे, तालुका चांदूर रेल्वे, जिल्हा अमरावती

| अ. क्र. | भूमापन क्रमांक किंवा गट नंबर | लागवड योग्य क्षेत्र | अंदाजित क्षेत्र पोट खराब क्षेत्र | एकूण क्षेत्र |
|---------|---------------------------------|---------------------|-------------------------------------|--------------|
| (१) | (२) | हे. आर | (३) | हे. आर |
| १ | ३५ | १ ०१ | - | १ ०१ |
| २ | ३६ | १ ०१ | - | १ ०१ |
| ३ | ३७ | १ ०१ | - | १ ०१ |
| ४ | ३८/१ | १ ७६ | - | १ ७६ |
| ५ | ३८/१ पैकी | १ ७६ | - | १ ७६ |
| ६ | ३८ | १ २१ | - | १ २१ |
| ७ | ४६ | १ १८ | - | १ १८ |
| ८ | ४६ पैकी | १ १७ | - | १ १७ |
| ९ | ४६ पैकी | १ ०१ | - | १ ०१ |
| १० | ४६ पैकी | १ ३५ | - | १ ३५ |
| ११ | ४२ पैकी | ० ३६ | - | ० ३६ |
| १२ | ४४ | ० ७३ | - | ० ७३ |
| १३ | ४५ | ० ४५ | - | ० ४५ |
| १४ | ४९ | १ ०१ | - | १ ०१ |
| १५ | ४९ पैकी | १ २२ | - | १ २२ |
| १६ | ४९ पैकी | १ १९ | - | १ १९ |
| १७ | ४९ पैकी | १ ५६ | - | १ ५६ |
| १८ | ४९ पैकी | २ ०२ | - | २ ०२ |
| १९ | ४८ पैकी | ० ४१ | - | ० ४१ |

अनुसूची - एक-चालू

| (१) | (२) | (३) | हे. आर |
|-----|---------|------|--------|
| २० | ४८ पैकी | १ २२ | - १ २२ |
| २१ | ४७ | ४ ८५ | - ४ ८५ |
| २२ | ६७ पैकी | १ ०१ | - १ ०१ |
| २३ | ६७ पैकी | ६ ५७ | - ६ ५७ |
| २४ | ५१ | १ ६५ | - १ ६५ |
| २५ | ५० | १ ०९ | - १ ०९ |
| २६ | ६५ | १ ६५ | - १ ६५ |
| २७ | ६४ | ० ६७ | - ० ६७ |
| २८ | ६३ | ० ५० | - ० ५० |
| २९ | ६२ | ० १४ | - ० १४ |
| ३० | ६१ पैकी | ० १३ | - ० १३ |
| ३१ | ६९ पैकी | १ ०१ | - १ ०१ |
| ३२ | ६९ पैकी | २ ०५ | - २ ०५ |
| ३३ | ६९ पैकी | १ ०१ | - १ ०१ |
| ३४ | ६९ पैकी | ० ८१ | - ० ८१ |
| ३५ | ६९ पैकी | ० ८१ | - ० ८१ |
| ३६ | ६८ पैकी | १ ९८ | - १ ९८ |
| ३७ | ६८ पैकी | १ १७ | - १ १७ |
| ३८ | ६८ पैकी | १ १७ | - १ १७ |
| ३९ | ६६ पैकी | ० ८६ | - ० ८६ |
| ४० | ६६ पैकी | ० ८६ | - ० ८६ |
| ४१ | ६६ पैकी | १ २९ | - १ २९ |
| ४२ | ६६ पैकी | ० ८६ | - ० ८६ |
| ४३ | ६६ पैकी | ० ८६ | - ० ८६ |
| ४४ | ६६ पैकी | ० ८६ | - ० ८६ |
| ४५ | ६६ पैकी | ० ८६ | - ० ८६ |
| ४६ | ७० पैकी | ० ५५ | - ० ५५ |
| ४७ | ७० पैकी | ० ४८ | - ० ४८ |
| ४८ | ७० पैकी | १ ७६ | - १ ७६ |
| ४९ | ८२ पैकी | ० ६० | - ० ६० |
| ५० | ८३ पैकी | ० ७४ | - ० ७४ |
| ५१ | ८३ पैकी | ० ८९ | - ० ८९ |
| ५२ | ८४ | १ ६८ | - १ ६८ |
| ५३ | ८५ पैकी | २ ३२ | - २ ३२ |
| ५४ | ८५ पैकी | १ ७७ | - १ ७७ |
| ५५ | ८६ पैकी | ० ५२ | - ० ५२ |
| ५६ | ८९ | ० ६७ | - ० ६७ |
| ५७ | ९० | ० ४० | - ० ४० |

अनुसूची - एक-चालू

| (१) | (२) | (३) | हे. आर |
|------|-----|-------|--------|
| ५८ | ९१ | ० ५३ | - |
| ५९ | ९२ | ० ८१ | - |
| ६० | ९३ | ० ८१ | - |
| ६१ | ९४ | २ ०३ | - |
| एकुण | | ७३ ९२ | ७३ ९२ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

| | | |
|------------------------|----|--|
| प्रकल्पाचे नाव | :— | रायगड नदी प्रकल्प |
| प्रकल्प कार्याचे वर्णन | :— | रायगड प्रकल्पाचे धरणाचे बांधकामासाठी (धरण व बुडीत क्षेत्र) |
| समाजाला मिळणारे लाभ | :— | या प्रकल्पा अंतर्गत एकुण ८ गावांना सिंचनासाठी पाणी, पिण्याच्या पाण्याची उपलब्धता, औद्योगिक वसाहतीसाठी पाणी पुरवठ्याचे सार्वजनिक प्रयोजन, समाजाला राष्ट्रीय संपत्तीत वाढ, मत्स्य व्यवसाय, पशुसंवर्धनामध्ये वाढ, कुटीर उद्योगास फायदा व रोजगार निर्मीती तसेच १५७०.०० हे. आर. जमीन सिंचनाचा लाभ हे सामाजिक फायदे होवून त्यायोगे सार्वजनिक हित जपल्या जाणार आहे. |

अनुसूची-तीन

| | | |
|-----------------------------------|----|---|
| बाधित व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास | :— | विस्थापनाची आवश्यकता नाही. सबब माहीती निरंक |
| भाग पाडणारी कारणे | | |

अनुसूची-चार

(पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश)

सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :— महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग ४ अ, महसूल व वनविभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

| | | |
|---|----|-----------------------------------|
| (अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-याचे पदनाम | :— | प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही. |
| (ब) प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता | :— | निरंक |
| (क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे | :— | निरंक |
| त्या अधिसूचनेचा तपशील | | |

टीप :— उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांचे कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

दिनांक २० एप्रिल २०१५.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ६९७

जिल्हाधिकारी यांजकडून

भूमी संपादन, पुनर्वसन व पुनर्स्थापना करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा

हक्क अधिनियम, २०१३

क्रमांक प्र.अ.-भू.सं-अ.का.-कावि-३५५-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम ३ च्या खंड (इ) परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना महसूल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त अधिसूचना” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड-अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमीन” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन” असा केला आहे.) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते (ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे),

आणि म्हणून उक्त अधिनियमाच्या उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने बाधीत व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे या सोबत जोडलेल्या अनुसूचित तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचिमध्ये कारणे नमुद करावीत.)

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकांचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर या अनुसूचिमध्ये तपशिल नमुद करावा.)

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम ४ अनुसार कोणतीही व्यक्ती, ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण-चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही;

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सुट देता येईल;

परंतु आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिली जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार जिल्हाधिकारी, भूमिसंपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त नियम” असा करण्यात आला आहे) यांच्या नियम १० च्या उपनियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमि अभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करीत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये, समुचित शासन असलेले जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांना पदनिर्देशित करित आहेत.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक १६-४७-२०१४-२०१५, मौजा-बोरगांव पेठ, तालुका अचलपूर, जिल्हा अमरावती

| अ. क्र. | सर्व्हे नंबर/गट नंबर | अंदाजित क्षेत्र |
|---------|----------------------|-----------------|
| (१) | (२) | (३) |
| | हे. आर | |
| १ | ८ | ० ९६ |
| २ | ९ | १ १८ |
| ३ | ११ | १ ६४ |
| ४ | १२ | ० ६० |
| ५ | १३ पैकी | १ ३० |
| ६ | १४ पैकी | ० ५७ |
| ७ | ५९ पैकी | ० ५७ |
| एकूण | | ६ ८२ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

| | | |
|------------------------|----|--|
| प्रकल्पाचे नाव | :— | वासणी मध्यम प्रकल्प |
| प्रकल्प कार्याचे वर्णन | :— | बोरगांव पेठ येथे मध्यम प्रकल्पाच्या पुनर्वसनाच्या कामाकरिता |
| समाजाला मिळणारे लाभ | :— | या मध्यम प्रकल्पाद्वारे जमिनीस ४३१७.०० हे. प्रत्यक्ष सिंचनाचा फायदा होत असून त्यामुळे शेतक-यांचे उत्पन्न वाढणार आहे. तसेच पिण्याच्या पाण्याची समस्या सुटणार आहे. तसेच औद्योगिक वापराकरिता पाणी उपलब्ध होणार आहे. |

अनुसूची-तीन

| | | |
|-----------------------------------|----|---|
| बाधित व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास | :— | प्रस्तावात नमूद प्रकरणातील भूसंपादित सर्व्हे क्रमांक मधील जमिनीमुळे बाधित व्यक्तींचे विस्थापन भाग पाडणारी कारणे |
| | | होत नसल्यामुळे माहिती निरंक. |

अनुसूची-चार

पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश

सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :— महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग ४ अ, महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

| | | |
|--|----|---|
| अ. प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-याचे पदनाम | :— | प्रस्तावात नमूद भूसंपादित सव्हे क्रमांक मधील जमीन प्रकल्पाकरिता संपादित करावयाची असल्यामुळे व प्रस्तावित जमिनीत पुनर्वसन व पुनर्वसाहत होत नाही म्हणून प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही. |
| ब. प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता | :— | निरंक |
| क. ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे त्या अधिसूचनेचा तपशील | :— | निरंक |

टीप :- उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांच्या कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ६९८

भूमी संपादन, पुनर्वसन व पुनर्स्थापना करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३

क्रमांक प्र.अ.-भू.सं-अ.का.-कावि-३५८-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम ३ च्या खंड (इ) परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना, महसूल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र. क्र.. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त अधिसूचना” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड-अे) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमीन” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन” असा केला आहे.) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते (ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे),

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने प्रकरणातील नमूद सव्हे क्रमांकातील जमिनीच्या भूसंपादनामुळे बाधित व्यक्तींचे विस्थापन होत नाही. त्यांची कारणे या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमूद करावीत.)

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-चार मध्ये दिलेला आहे;

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर या अनुसूचीमध्ये तपशील नमूद करावा.)

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम ४ अनुसार कोणतीही व्यक्ती, ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण-चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल.

परंतु आणखी असे की, कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिली जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार जिल्हाधिकारी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “ उक्त नियम ” असा करण्यात आला आहे) यांच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमि अभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये, समुचित शासन असलेले जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांना पदनिर्देशित करित आहेत.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ६२-४७-२०१२-२०१३, मौजा-चिचखेड (खानापूर), तालुका अचलपूर, जिल्हा अमरावती

| अ. क्र. | सर्व्हे नंबर/गट नंबर | अंदाजित क्षेत्र |
|---------|----------------------|-----------------|
| (१) | (२) | (३) |
| | | हे. आर |
| १ | ३ | ० १२ |
| २ | १५ | १ ७३ |
| ३ | १७ | ० २१ |
| ४ | १८ | ० ७८ |
| ५ | १९ | ० ३५ |
| ६ | २१ | ० ३८ |
| ७ | २२ | ० २७ |
| ८ | ५० | ३ ८२ |
| ९ | ५४ पैकी | ० ०६ |
| १० | ५४ पैकी | ० ०६ |
| ११ | ५५ | ० २४ |
| १२ | ५६ | ० ०८ |
| १३ | ५९ | ० १० |
| १४ | ६३ | ० ३० |
| १५ | ६४ | ० २० |

अनुसूची-एक—चालू

| (१) | (२) | (३) |
|-----|-----|-------------|
| | | हे. आर |
| १६ | ९३ | ० १३ |
| १७ | ९४ | ० १२ |
| | | एकूण . ८ ९५ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

| | | |
|------------------------|----|--|
| प्रकल्पाचे नाव | :— | चंद्रभागा बॅरेज बृहत लघु प्रकल्प. |
| प्रकल्प कार्याचे वर्णन | :— | चिचखेड (खानापूर) येथे लघु प्रकल्प पाणी अडवणे (धरण व बुडीत क्षेत्र). |
| समाजाला मिळणारे लाभ | :— | या लघु प्रकल्पाद्वारे शेती सिंचन क्षेत्रामध्ये वाढ, पिण्याचे पाण्याचा पुरवठा, मत्स्यव्यवसाय, पशुसंवर्धनामध्ये वाढ व रोजगारनिर्मिती इत्यादी फायदे इत्यादी ग्रामीण पायाभूत सुविधांचा लाभ होईल. |

अनुसूची-तीन

| | |
|--------------------------------------|---|
| बाधित व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास :— | प्रस्तावात नमूद प्रकरणातील भूसंपादित सर्व्हे क्रमांक मधील जमिनीमुळे बाधित व्यक्तींचे विस्थापन |
| भाग पाडणारी कारणे | होत नसल्यामुळे माहिती निरंक. |

अनुसूची-चार

पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश

सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला):— महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग ४-अ, महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

| | | |
|--|----|---|
| अ. प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-याचे पदनाम | :— | प्रस्तावात नमूद भूसंपादित सर्व्हे क्रमांक मधील जमीन प्रकल्पाकरिता संपादित करावयाची असल्यामुळे व प्रस्तावित जमिनीत पुनर्वसन व पुनर्वसाहत होत नाही म्हणून प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही. |
| ब. प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता | :— | निरंक |
| क. ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे त्या अधिसूचनेचा तपशील | :— | निरंक |

टीप :— उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांच्या कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

दिनांक ६ जून २०१५.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ६९९

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३

क्रमांक प्रअ-भूसं-अका-कावि-३६०-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम-३ च्या खंड (इ) च्या परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना, महसूल व वन विभाग, क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी, २०१५ (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त अधिसूचना ” असा करण्यात आला आहे) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-३ च्या खंड (झेड-अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचे जिल्हाधिकारी हे उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त जमीन ” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “ उक्त सार्वजनिक प्रयोजन ” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते. ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे.

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने प्रकरणातील नमूद सर्व्हे क्रमांकातील जमिनीच्या भूसंपादनामुळे बाधित व्यक्तींचे विस्थापन होत नाही. त्याची कारणे या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमूद करावीत) ;

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-चार मध्ये दिलेला आहे ;

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्त करणे आवश्यक असेल तर, या अनुसूचीमध्ये तपशील नमूद करावा).

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम-४ अनुसार कोणतीही व्यक्ती, ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिकारी यांना विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल.

परंतु आणखी असे की, कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिली जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार, जिल्हाधिकारी भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्यांचा निर्देश “ उक्त नियम ” असा करण्यात आला आहे) याच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमि अभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये, समुचित शासन असलेले जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ०६-४७-२०१०-२०११

गांव-रत्नापूर, तालुका-अचलपूर, जिल्हा-अमरावती

अ. क्र. सर्व्हे क्रमांक/ अंदाजित क्षेत्र

गट क्रमांक

| (१) | (२) | (३) |
|-----|---------|--------|
| | | हे. आर |
| १ | २७ | ० ६० |
| २ | २८ पैकी | ० ४४ |

अनुसूची एक-चालू

| (१) | (२) | (३) |
|----------|---------|--------|
| | | हे. आर |
| ३ | २८ पैकी | ० ४३ |
| ४ | २९ पैकी | ० ४० |
| एकूण . . | | १ ८७ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नाव—पाझर तलाव मेघनाथपूर, मौजा रत्नापूर.

प्रकल्पकार्याचे वर्णन—रत्नापूर येथे पाझर तलाव निर्माण करणे.

समाजाला मिळणारे लाभ—या पाझर तलावाद्वारे जमिनीस अप्रत्यक्ष सिंचनाचा फायदा होत असून सार्वजनिक हितासाठी शेतातील विहिरीची पाण्याची पातळी वाढणे, सिंचन सुविधा, मत्स्यव्यवसाय, गुरे ढोरांना पिण्याकरिता पाणी, इत्यादी ग्रामीण पायाभूत सुविधांचा लाभ होईल.

अनुसूची-तीन

बाधीत व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे—प्रस्तावात नमूद प्रकरणातील भूसंपादित सर्व्हे क्रमांक मधील जमिनीमध्ये कोणतीही व्यक्ती किंवा कुटुंब विस्थापीत होत नाही.

अनुसूची-चार

पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश

सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :-भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क व अधिनियम, २०१३ चे कलम १० (क) व त्याअनुषंगाने महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग ४अ, महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचनेन्वये सामाजिक प्रमाण निर्धारणातुन सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-यांचे पदनाम—प्रस्तावात नमूद भूसंपादित सर्व्हे क्रमांकमधील जमीन प्रकल्पाकरिता संपादित करावयाची असल्यामुळे व प्रस्तावित जमिनीत पुनर्वसन व पुनर्वसाहत होत नाही म्हणून प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासनाच्या कार्यालयाचा पत्ता—निरंक

(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे, त्या अधिसूचनेचा तपशील—निरंक

टीप—उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांचे कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ७००

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३

क्रमांक प्रअ-भूसं-अका-कावि-३६३-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम-३ च्या खंड (इ) च्या परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना, महसूल व वन विभाग, क्र. संकिर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी, २०१५ (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त अधिसूचना ” असा करण्यात आला आहे) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-३ च्या खंड (झेड-अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचे जिल्हाधिकारी हे उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशिलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त जमीन ” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “ उक्त सार्वजनिक प्रयोजन ” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे. असे वाटते, ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने प्रकरणातील नमूद सर्व्हे क्रमांकातील जमिनीच्या भूसंपादनामुळे बाधित व्यक्तींचे विस्थापन होत नाही. त्याची कारणे या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूची मध्ये कारणे नमूद करावीत) ;

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-चार मध्ये दिलेला आहे;

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्त करणे आवश्यक असले तर, या अनुसूची मध्ये तपशील नमूद करावा);

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम-४ नुसार कोणतीही व्यक्ती, ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही :

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिकारी यांना विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल ;

परंतु आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिली जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार, जिल्हाधिकारी भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्यांचा निर्देश “ उक्त नियम ” असा करण्यात आला आहे) यांच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमि अभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये, समुचित शासन असलेले जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ०२-४७-२०१४-१५

गांव-ईमामपूर, तालुका-चांदूर बाजार, जिल्हा-अमरावती

अ. क्र. सर्व्हे क्रमांक/
गट क्रमांक

| (१) | (२) | (३) |
|-----|--------|--------|
| | | हे. आर |
| १ | ४१/१ | १ ८७ |
| २ | ४१/१ अ | १ ८८ |
| ३ | ४१/२ | १ ४० |
| ४ | ४१/३ | ० ८१ |
| ५ | ४१/४ | १ ६२ |
| ६ | ४२/१ | १ ०१ |
| ७ | ४२/१ | २ ०० |

अनुसूची एक-चालू

| (१) | (२) | (३) |
|----------|--------|--------|
| | | हे. आर |
| ८ | ४२/१ अ | ० ८३ |
| ९ | ४२/२ | २ ७० |
| १० | ४२/१ ब | १ ६२ |
| एकूण . . | | १५ ७४ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नाव—राजुरा बृहत लघु प्रकल्प.

प्रकल्पकार्याचे वर्णन—ईमामपूर येथे लघुप्रकल्प पाणी अडवणे (धरण व बुडीत क्षेत्र) मधील राजुरा गावाचे पुनर्वसनाच्या कामाकरिता.

समाजाला मिळणारे लाभ—या लघु प्रकल्पाद्वारे जमिनीस प्रत्यक्ष सिंचनाचा फायदा होत असून लाभ क्षेत्रातील संबंधीत शेतक-यांचे जिवनमान उंचवणार आहे. शेतक-यांचे उत्पन्न वाढून कृषि संपत्तीत वाढ होईल. पिण्याचे पाण्याचा पुरवठा, उद्योगास पाणीपुरवठा, मत्स्यव्यवसाय, पशुसंवर्धनामध्ये वाढ, कुटिर उद्योगास फायदा व रोजगार निर्मिती इत्यादी ग्रामीण पायाभूत सुविधांचा लाभ होईल.

अनुसूची-तीन

बाधीत व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे—प्रस्तावात नमूद प्रकरणातील भूसंपादित सर्व्हे क्रमांक मधील जमिनीमुळे बाधीत व्यक्तीचे विस्थापन होत नसल्यामुळे माहिती निरंक.

अनुसूची-चार

पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश

सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सारांश : (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :-महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग ४अ, महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचनेअन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-यांचे पदनाम—प्रस्तावात नमूद भूसंपादित सर्व्हे क्रमांकमधील जमीन मौजा राजुरा गावठाणाचे पुनर्वसनासाठी संपादित होत आहे. म्हणून प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासनाच्या कार्यालयाचा पत्ता—निरंक

(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे, त्या अधिसूचनेचा तपशील—निरंक

टीप—उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांचे कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ७०१

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३

क्रमांक प्रअ-भूसं-अका-कावि-३६५-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमिसंपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम-३ च्या खंड (इ) च्या परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना, महसूल व वन विभाग, क्र. संकिर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी, २०१५ (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त अधिसूचना ” असा करण्यात आला

आहे) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-३ च्या खंड (झेड-अे) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचे जिल्हाधिकारी हे उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशिलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त जमीन ” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “ उक्त सार्वजनिक प्रयोजन ” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे. असे वाटते, ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने प्रकरणातील नमूद सर्व्हे क्रमांकातील जमिनीच्या भूसंपादनामुळे बाधित व्यक्तींचे विस्थापन होत नाही. त्याची कारणे या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूची मध्ये कारणे नमूद करावीत) ;

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-चार मध्ये दिलेला आहे ;

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्त करणे आवश्यक असले तर, या अनुसूची मध्ये तपशील नमूद करावा).

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम-४ अनुसार कोणतीही व्यक्ती, ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही :

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिकारी यांना विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल ;

परंतु आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिली जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार, जिल्हाधिकारी भूमिसंपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्यांचा निर्देश “ उक्त नियम ” असा करण्यात आला आहे) यांच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमि अभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये, समुचित शासन असलेले जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ४४-४७-२०१२-१३

गाव-कविठा (बु.), तालुका-अचलपूर, जिल्हा-अमरावती

अ. क्र. सर्व्हे क्रमांक/ अंदाजे क्षेत्र गट क्रमांक

| (१) | (२) | (३) |
|-----|-----|--------|
| | | हे. आर |
| १ | ३२९ | ० ३९ |
| २ | ३०० | ० २८ |
| ३ | २९८ | ० ६७ |
| ४ | ३०२ | ० १२ |

अनुसूची एक-चालू

| (१) | (२) | (३) हे. आर |
|-----|-------|---------------|
| ५ | ३१३ | ० २४ |
| ६ | ३०४ | ० ०५ |
| ७ | ३०५ | ० ०९ |
| ८ | ३०६ | ० १४ |
| ९ | ३०७ | ० ०८ |
| १० | ३०८ | ० ३४ |
| ११ | ३०९ | ० ३६ |
| १२ | ३१० अ | ० ०२ |
| १३ | ३१० ब | ० ०१ |
| १४ | ४३३ | ० ५० |
| १५ | ४३२ | ० ६७ |
| १६ | ४३४ | ० १७ |
| १७ | ४३१ | ० १२ |
| १८ | ४३० | ० ५० |
| १९ | ४१३ | ० ०२ |
| २० | ४२१ | ० ०६ |
| २१ | ४२३ | ० ५० |
| २२ | ८१ | ० ६० |
| २३ | ८० | ० ४५ |
| २४ | ७९ | ० २४ |
| २५ | ७७ | ० ३६ |
| २६ | ७८ | ० १५ |
| २७ | ७५ | ० १८ |
| २८ | ७४ | ० ०६ |
| २९ | ७३ | ० २१ |
| ३० | ७२ | ० ०६ |
| ३१ | ७१ | ० ०९ |
| ३२ | १०२ | ० ३६ |
| ३३ | १०३ | ० ५४ |
| ३४ | ३०१ | १ ०४ |

एकूण . . ९ ६७

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नाव—करजगांव बृहत लघु प्रकल्प.

प्रकल्पकार्याचे वर्णन—कविठा (बु.) येथे करजगांव प्रकल्पाच्या कालव्याच्या कामाकरिता.

समाजाला मिळणारे लाभ—या लघु प्रकल्पाद्वारे १५१०.०० हे. जमिनीस सिंचनाचा लाभ होणार आहे. तसेच पिण्याच्या पाण्याची समस्या सुटणार आहे. तसेच औद्योगिक वापराकरिता पाणी उपलब्ध होणार आहे.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे—प्रस्तावात नमूद प्रकरणातील भूसंपादित सर्व्हे क्रमांक मधील जमिनीमुळे बाधित व्यक्तीचे विस्थापन होत नसल्यामुळे माहिती—निरंक.

अनुसूची-चार

पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश

सामाजिक प्रभाव निर्धारण सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :—महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग ४ अ, महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचनेअन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-यांचे पदनाम—प्रस्तावात नमूद भूसंपादित सर्व्हे क्रमांकमधील जमीन प्रकल्पाकरिता संपादित करावयाची असल्यामुळे व प्रस्तावित जमिनीत पुनर्वसन व पुनर्वसाहत होत नाही म्हणून प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासनाच्या कार्यालयाचा पत्ता—निरंक

(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे, त्या अधिसूचनेचा तपशील—निरंक

टीप—उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांचे कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ७०२

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्स्थापना करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३.

क्रमांक प्रअ-भूसं-अका-कावि-३६७-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम-३ च्या खंड (इ) च्या परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना, महसूल व वन विभाग, क्र. संकिर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी, २०१५ (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त अधिसूचना ” असा करण्यात आला आहे) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-३ च्या खंड (झेड अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचे जिल्हाधिकारी हे उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त जमीन ” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “ उक्त सार्वजनिक प्रयोजन ” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते, ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची, दोन मध्ये दिलेले आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने प्रकरणातील नमूद सर्व्हे क्रमांकातील जमिनीच्या भूसंपादनामुळे बाधित व्यक्तीचे विस्थापन होत नाही. त्याची कारणे या सोबत जोडलेल्या अनुसूची तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूची मध्ये कारणे नमूद करावीत) ;

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश यासोबत जोडलेल्या अनुसूची चार मध्ये दिलेला आहे ;

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्त करणे आवश्यक असेल तर, या अनुसूची मध्ये तपशील नमूद करावा).

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम-४ अनुसार कोणतीही व्यक्ती, ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिकारी यांना विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल :

परंतु आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिली जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार, जिल्हाधिकारी भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्यांचा निर्देश “उक्त नियम” असा करण्यात आला आहे) यांच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमि अभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये, समुचित शासन असलेले जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ११-४७-२०१४-१५

मौजा रवळगांव, तालुका-अचलपूर, जिल्हा-अमरावती

अ. क्र. सर्व्हे क्रमांक/
गट क्रमांक

अंदाजे क्षेत्र

| (१) | (२) | (३) |
|-----|-----|--------|
| | | हे. आर |
| १ | ३२ | ० ६१ |
| २ | ३१ | ० ४१ |
| ३ | २१ | ० ८३ |
| ४ | १९ | ० ६१ |
| ५ | २० | ० २८ |
| ६ | १७ | ० ९६ |
| ७ | १४ | ० ४४ |
| ८ | १५ | ० ३४ |
| ९ | १३ | ० २३ |
| १० | ८ | ० २३ |
| ११ | ९ | ० २३ |
| १२ | ६३ | १ १३ |
| १३ | ६२ | ० ६८ |
| १४ | ६० | ० ३६ |
| १५ | ६८ | ० ९० |
| १६ | ७० | ० ७७ |
| १७ | ७१ | ० २३ |

एकूण . . ९ २४

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नांव—वासणी मध्यम प्रकल्प.

प्रकल्प कार्याचे वर्णन—रवळगांव येथे वासणी मध्यम प्रकल्पाच्या कालव्याच्या कामाकरिता.

समाजाला मिळणारे लाभ—या मध्यम प्रकल्पाद्वारे जमिनीस ४३१७.०० हे. प्रत्यक्ष सिंचनाचा फायदा होत असून त्यामुळे शेतक-यांचे उत्पन्न वाढणार आहे. तसेच पिण्याच्या पाण्याची समस्या सुटणार आहे. तसेच औद्योगिक वापराकरिता पाणी उपलब्ध होणार आहे.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे—प्रस्तावात नमूद प्रकरणातील भूसंपादित सर्व्हे क्रमांक मधील जमिनीमुळे बाधित व्यक्तीचे विस्थापन होत नसल्यामुळे माहिती—निरंक.

अनुसूची-चार

पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश

सामाजिक प्रभाव निर्धारण सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :—महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग ४ अ, महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचनेअन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-यांचे पदनाम—प्रस्तावात नमूद भूसंपादित सर्व्हे क्रमांकमधील जमीन प्रकल्पाकरिता संपादित करावयाची असल्यामुळे व प्रस्तावित जमिनीत पुनर्वसन व पुनर्वसाहत होत नाही म्हणून प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासनाच्या कार्यालयाचा पत्ता—निरंक

(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे, त्या अधिसूचनेचा तपशील—निरंक

टीप—उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांचे कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ७०३

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्स्थापना करतांना वाजवी भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३.

क्रमांक प्रअ-भूसं-अका-कावि-३६९-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम-३ च्या खंड (इ) च्या परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना, महसूल व वन विभाग, क्र. संकिर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी, २०१५ (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त अधिसूचना ” असा करण्यात आला आहे) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-३ च्या खंड (झेड अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचे जिल्हाधिकारी हे उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त जमीन ” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “ उक्त सार्वजनिक प्रयोजन ” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे. असे वाटते, ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची दोन मध्ये दिलेले आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने प्रकरणातील नमूद सर्व्हे क्रमांकातील जमिनीच्या भूसंपादनामुळे बाधित व्यक्तींचे विस्थापन होत नाही. त्याची कारणे या सोबत जोडलेल्या अनुसूची तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूची मध्ये कारणे नमूद करावीत);

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश यासोबत जोडलेल्या अनुसूची चार मध्ये दिलेला आहे.

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्त करणे आवश्यक असेल तर, या अनुसूची मध्ये तपशील नमूद करावा).

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम-४ अनुसार कोणतीही व्यक्ती, ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिकारी यांना विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल ;

परंतु आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिली जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार, जिल्हाधिकारी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्यांचा निर्देश “उक्त नियम” असा करण्यात आला आहे) यांच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहीत केल्याप्रमाणे भूमि अभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये, समूचित शासन असलेले जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक १२-४७-२०१४-१५

मौजा रवळगांव, तालुका-अचलपूर, जिल्हा-अमरावती

अ. क्र. सर्व्हे क्रमांक/
गट क्रमांक

हे. आर

| (१) | (२) | (३) |
|-----|-----|--------|
| | | हे. आर |
| १ | ३३१ | ० २३ |
| २ | ३३२ | ० ६८ |
| ३ | ३३३ | १ ०१ |
| ४ | ५६ | ० ७० |
| ५ | ३४१ | ० २७ |
| ६ | ३४० | ० ५० |
| ७ | ३९९ | ० ८१ |
| ८ | ३९७ | ० २३ |
| ९ | ३९६ | ० २३ |
| १० | ३९५ | ० ११ |
| ११ | ४११ | ० २७ |

अनुसूची-एक-चालू

| (१) | (२) | (३) |
|-----|-----|--------|
| | | हे. आर |
| १२ | ४१२ | ० २९ |
| १३ | ४१० | ० २९ |
| १४ | ४०९ | ० ५६ |
| १५ | ४१७ | ० ४७ |
| १६ | ४१८ | ० ११ |
| १७ | १७ | ० ६८ |
| १८ | २२ | ० ४५ |
| १९ | २० | ० ७९ |
| २० | ४६७ | ० ६८ |
| २१ | ४६६ | ० १४ |
| २२ | ४६५ | ० ५६ |
| २३ | ४६२ | ० ३९ |
| २४ | ४६१ | ० २३ |
| २५ | ३० | ० १८ |
| २६ | ४५८ | ० ६८ |
| २७ | ४५५ | ० ३४ |
| २८ | ४५३ | ० ४५ |
| २९ | ४५१ | ० ४१ |

एकूण . . १२ ७४

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नांव—वासणी मध्यम प्रकल्प.

प्रकल्प कार्याचे वर्णन—येवता येथे वासणी मध्यम प्रकल्पाच्या कालव्याच्या कामाकरिता.

समाजाला मिळणारे लाभ—या मध्यम प्रकल्पाद्वारे जमिनीस ४३१७.०० हे. प्रत्यक्ष सिंचनाचा फायदा होत असून त्यामुळे शेतक-यांचे उत्पन्न वाढणार आहे. तसेच पिण्याच्या पाण्याची समस्या सुटणार आहे. तसेच औद्योगिक वापराकरिता पाणी उपलब्ध होणार आहे.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे—प्रस्तावात नमूद प्रकरणातील भूसंपादित सर्व्हे क्रमांक मधील जमिनीमुळे बाधित व्यक्तींचे विस्थापन होत नसल्यामुळे माहिती—निरंक.

अनुसूची-चार

पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश

सामाजिक प्रभाव निर्धारण सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :-महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग ४ अ, महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचनेअन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-यांचे पदनाम-प्रस्तावात नमूद भुसंपादित सर्व्हे क्रमांकमधील जमीन प्रकल्पाकरिता संपादित करावयाची असल्यामुळे व प्रस्तावित जमिनीत पुनर्वसन व पुनर्वसाहत होत नाही म्हणून प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासनाच्या कार्यालयाचा पत्ता-निरंक

(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे, त्या अधिसूचनेचा तपशील-निरंक

टीप-उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भुसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांचे कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ७०४

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना वाजवी भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३

क्रमांक प्रअ-भूसं-अका-कावि-३७२-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम-३ च्या खंड (इ) च्या परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना, महसूल व वन विभाग, क्र. संकिर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी, २०१५ (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त अधिसूचना ” असा करण्यात आला आहे) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-३ च्या खंड (झेड अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचे जिल्हाधिकारी हे उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची एक मध्ये अधिक तपशिलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त जमीन ” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “ उक्त सार्वजनिक प्रयोजन ” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे. असे वाटते, ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची दोन मध्ये दिलेले आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सावर्जनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने प्रकरणातील नमूद सर्व्हे क्रमांकातील जमिनीच्या भुसंपादनामुळे बाधित व्यक्तींचे विस्थापन होत नाही. त्याची कारणे यासोबत जोडलेल्या अनुसूची तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूची मध्ये कारणे नमूद करावीत)

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश यासोबत जोडलेल्या अनुसूची चार मध्ये दिलेला आहे.

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या ‘ अनुसूची पाच ’ मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्त करणे आवश्यक असले तर, या अनुसूची मध्ये तपशील नमूद करावा).

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम-४ अनुसार कोणतीही व्यक्ती, ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिकारी यांना विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल ;

परंतु आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरःसर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिली जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार, जिल्हाधिकारी भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्यांचा निर्देश “ उक्त नियम ” असा करण्यात आला आहे) यांच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहीत केल्याप्रमाणे भूमि अभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये, समुचित शासन असलेले जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भुसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांना पदनिर्देशित करित आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ६९-४७-२०१२-१३

मौजा असदपूर, तालुका-अचलपूर, जिल्हा-अमरावती

| अ. क्र. | सर्व्हे क्रमांक/ गट क्रमांक | अंदाजे क्षेत्र |
|---------|--------------------------------|----------------|
| (१) | (२) | (३) |
| | | हे. आर |
| १ | ४८१ | ० ११ |
| २ | ४८२ पैकी | ० १५ |
| ३ | ४८२ पैकी | ० ०२ |
| ४ | ४८५ | ० ४० |
| ५ | ४८७ | ० ०८ |
| ६ | ४८८ | ० १९ |
| ७ | ४९१ पैकी | ० १० |
| ८ | ४९१ पैकी | ० ३६ |
| ९ | ५०१ | ० १६ |
| १० | ५०३ पैकी | ० १३ |
| ११ | ५०३ पैकी | ० १३ |
| १२ | ५०६ | ० १७ |
| १३ | ५०८ पैकी | ० २६ |
| १४ | ५०९ | ० ५० |
| १५ | ५१० | ० १५ |
| १६ | ५११ | ० ०४ |
| १७ | ५१३ | ० १० |
| १८ | ५१४ | ० १६ |
| १९ | ५१५ | ० १५ |
| २० | ५१६ | १ ६९ |
| २१ | ५१८ | ० ७६ |
| २२ | ५१९ | ० ६७ |
| २३ | ५२० | ० ८८ |
| २४ | ५२२ | ० ०७ |
| २५ | ५२३ | ० ०६ |
| २६ | ५२४ | ० ०७ |

अनुसूची-एक—चालू

| (१) | (२) | (३) |
|-----|----------|--------|
| | | हे. आर |
| २७ | ५२८ | ० १८ |
| २८ | ५२९ | १ ६५ |
| २९ | ५३० | ३ ६० |
| ३० | ५३१ | ० ४४ |
| ३१ | ५३३ | २ ४० |
| ३२ | ५४४ | १ ५५ |
| ३३ | ५४६ | ० ६६ |
| ३४ | ५४७ | १ २८ |
| ३५ | ५४८ | ० २९ |
| ३६ | ५५० | ० ०५ |
| ३७ | ५५१ | ० ११ |
| ३८ | ५५२ | ० १३ |
| ३९ | ५५४ | १ २९ |
| ४० | ५५५ | ० ३१ |
| ४१ | ५५६ | ० १० |
| ४२ | ५५७ | ० २९ |
| ४३ | ५१० पैकी | ० २४ |
| ४४ | ५१० पैकी | ० ३० |
| ४५ | ५११ पैकी | ० २५ |
| ४६ | ५४९ | ० ०१ |

एकूण . . २२ ६९

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नांव—चंद्रभागा बॅरेज बृहत लघु प्रकल्प

प्रकल्प कार्याचे वर्णन—असदपूर येथे लघुप्रकल्प पाणी अडवणे (धरण व बुडीत क्षेत्र)

समाजाला मिळणारे लाभ—या लघु प्रकल्पाद्वारे शेती सिंचन क्षेत्रामध्ये वाढ, पिण्याचे पाण्याचा पुरवठा, मत्स्य व्यवसाय, पशुसंवर्धनामध्ये वाढ व रोजगारनिर्मिती इत्यादी फायदे इत्यादी ग्रामिण पायाभुत सुविधांचा लाभ होईल.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे—प्रस्तावात नमुद प्रकरणातील भुसंपादित सर्व्हे क्रमांक मधील जमिनीमुळे बाधित व्यक्तींचे विस्थापन होत नसल्यामुळे माहिती—निरंक.

अनुसूची-चार

पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश

सामाजिक प्रभाव निर्धारण सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :-महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग ४अ महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचनेअन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-यांचे पदनाम-प्रस्तावात नमुद भुसंपादित सव्हे क्रमांकमधील जमीन प्रकल्पाकरिता संपादित करावयाची असल्यामुळे व प्रस्तावित जमिनीत पुनर्वसन व पुनर्वसाहत होत नाही म्हणून प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासनाच्या कार्यालयाचा पत्ता-निरंक

(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे, त्या अधिसूचनेचा तपशील-निरंक

टीप-उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांचे कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

दिनांक ९ जून २०१५.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ७०५

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना वाजवी भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३.

क्रमांक प्रअ-भूसं-अका-कावि-४५६-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम-३ च्या खंड (इ) च्या परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना, महसूल व वन विभाग, क्र. संकिर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी, २०१५ (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त अधिसूचना ” असा करण्यात आला आहे) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-३ च्या खंड (झेड अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टर पेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचे जिल्हाधिकारी हे उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची एक मध्ये अधिक तपशिलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त जमीन ” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “ उक्त सार्वजनिक प्रयोजन ” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे. असे वाटते, ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची दोन मध्ये दिलेले आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने प्रकरणातील नमुद सव्हे क्रमांकातील जमिनीच्या भूसंपादनामुळे बाधित व्यक्तींचे विस्थापन होत नाही. त्याची कारणे यासोबत जोडलेल्या अनुसूची तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूची मध्ये कारणे नमूद करावीत)

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश यासोबत जोडलेल्या अनुसूची चार मध्ये दिलेला आहे.

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या ‘ अनुसूची पाच ’ मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्त करणे आवश्यक असले तर, या अनुसूची मध्ये तपशील नमूद करावा).

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम-४ अनुसार कोणतीही व्यक्ती, ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिकारी यांना विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल ;

परंतु आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरःसर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिली जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार, जिल्हाधिकारी भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्यांचा निर्देश “उक्त नियम” असा करण्यात आला आहे) यांच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहीत केल्याप्रमाणे भूमि अभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये, समुचित शासन असलेले जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भुसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भुसंपादन प्रकरण क्रमांक १५-४७-२०१४-१५

मौजा नरसिंगपूर, तालुका-अचलपूर, जिल्हा-अमरावती

अ. क्र. सर्व्हे क्रमांक/
गट क्रमांक

अंदाजे क्षेत्र

| (१) | (२) | (३) |
|-----|-----|--------|
| | | हे. आर |
| १ | १८१ | ० ३४ |
| २ | १८० | ० १४ |
| ३ | १७४ | ० २६ |
| ४ | १७३ | ० ५० |
| ५ | १६२ | ० ४३ |
| ६ | १६१ | ० ४८ |
| ७ | १६९ | ० ६६ |
| ८ | १६३ | ० ४० |
| ९ | २०१ | ० ४० |
| १० | १९९ | ० ८५ |
| ११ | २०० | ० १२ |
| १२ | २०५ | ० ३६ |

एकूण . . ४ ९४

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नांव—वासणी मध्यम प्रकल्प

प्रकल्प कार्याचे वर्णन—नरसिंगपूर येथे वासणी मध्यम प्रकल्पाच्या कालव्याच्या कामाकरिता

समाजाला मिळणारे लाभ—या मध्यम प्रकल्पाद्वारे ४३१७.०० हे. जमिनीस सिंचनाचा लाभ होणार आहे. तसेच पिण्याच्या पाण्याची समस्या सुटणार आहे. तसेच औद्योगिक वापराकरिता पाणी उपलब्ध होणार आहे.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे—प्रस्तावात नमुद प्रकरणातील भुसंपादित सर्व्हे क्रमांक मधील जमिनीमुळे बाधित व्यक्तीचे विस्थापन होत नसल्यामुळे माहिती—निरंक.

अनुसूची-चार

पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश

सामाजिक प्रभाव निर्धारण सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :-महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग ४अ महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचनेअन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-यांचे पदनाम-प्रस्तावात नमुद भुसंपादित सर्व्हे क्रमांकमधील जमीन प्रकल्पाकरिता संपादित करावयाची असल्यामुळे व प्रस्तावित जमिनीत पुनर्वसन व पुनर्वसाहत होत नाही म्हणून प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासनाच्या कार्यालयाचा पत्ता-निरंक

(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे, त्या अधिसूचनेचा तपशील-निरंक

टीप-उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, अचलपूर यांचे कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

दिनांक १७ जून २०१५.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ७०६

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना वाजवी भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३.

क्रमांक प्रअ-भूसं-अका-कावि-५०२-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम-३ च्या खंड (इ) च्या परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना, महसूल व वन विभाग, क्र. संकिर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी, २०१५ (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त अधिसूचना ” असा करण्यात आला आहे) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-३ च्या खंड (झेड अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी, एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचे जिल्हाधिकारी हे उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची एक मध्ये अधिक तपशिलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त जमीन ” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “ उक्त सार्वजनिक प्रयोजन ” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे. असे वाटते, ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची दोन मध्ये दिलेले आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने प्रकरणातील नमुद सर्व्हे क्रमांकातील जमिनीच्या भूसंपादनामुळे बाधित व्यक्तींचे विस्थापन होत नाही. त्याची कारणे यासोबत जोडलेल्या अनुसूची तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूची मध्ये कारणे नमूद करावीत.)

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश यासोबत जोडलेल्या अनुसूची चार मध्ये दिलेला आहे.

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या ‘ अनुसूची पाच ’ मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्त करणे आवश्यक असले तर, या अनुसूची मध्ये तपशील नमूद करावा).

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम-४ अनुसार कोणतीही व्यक्ती, ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिकारी यांना विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल ;

परंतु आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरःसर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिली जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार, जिल्हाधिकारी भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्यांचा निर्देश “ उक्त नियम ” असा करण्यात आला आहे) यांच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहीत केल्याप्रमाणे भूमि अभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये, समुचित शासन असलेले जिल्हाधिकारी, उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदुर रेल्वे यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ३२-४७-२०१४-१५

गाव-जावरा, तालुका-नांदगाव खंडेश्वर, जिल्हा-अमरावती

| अ. क्र. | भूमापन क्रमांक किंवा गट नंबर | अंदाजे क्षेत्र | | |
|---------|------------------------------|---------------------|------------------|--------------|
| | | लागवड योग्य क्षेत्र | पोट खराब क्षेत्र | एकूण क्षेत्र |
| (१) | (२) | (३) | | |
| | | हे. आर | | हे. आर |
| १ | ११/१ | २ ८४ | . . | २ ८४ |
| २ | ११/१ | ० ०४ | . . | ० ०४ |
| ३ | १२/१क | ० ०२ | . . | ० ०२ |
| ४ | १२/२क | ० १६ | . . | ० १६ |
| ५ | १२/२अ | ० ६२ | . . | ० ६२ |
| ६ | १२/२ब | ० ८५ | . . | ० ८५ |
| ७ | १४/२क | ० ०१ | . . | ० ०१ |
| ८ | १४/२ब | ० ०५ | . . | ० ०५ |
| ९ | १४/२अ | ० ०६ | . . | ० ०६ |
| १० | १४/२ | ० ०३ | . . | ० ०३ |
| ११ | १५/५अ | ० ७३ | . . | ० ७३ |
| १२ | १७ | २ ०९ | . . | २ ०९ |
| १३ | १८/१ | २ ८१ | . . | २ ८१ |
| १४ | १८/२ | २ २८ | . . | २ २८ |
| १५ | १९/१ | ० ८२ | . . | ० ८२ |
| १६ | १९/२ | १ ६१ | . . | १ ६१ |

अनुसूची-एक—चालू

| (१) | (२) | (३) | |
|-----|------|--------------|--------|
| | | हे. आर | हे. आर |
| १७ | १९/२ | ३ २१ | ३ २१ |
| १८ | २१/१ | ० ७८ | ० ७८ |
| | | एकूण . १९ ०१ | १९ ०१ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नांव—टिमटाळा (संग्राहक) लघु पाटबंधारे प्रकल्प

प्रकल्प कार्याचे वर्णन—जावरा येथे टिमटाळा (संग्राहक) लघु पाटबंधारे प्रकल्पाचे कामासाठी (बुडीत क्षेत्र व धरण बैठकी करीता)

(धरण व बुडीत क्षेत्र)

समाजाला मिळणारे लाभ—या प्रकल्पांतर्गत पिण्याच्या पाण्याची उपलब्धता, औद्योगिक वसाहतीसाठी पाणी पुरवठ्याचे सार्वजनिक प्रयोजन, समाजाला राष्ट्रीय संपत्तीत वाढ, मत्स्य व्यवसाय पशुसंवर्धनामध्ये वाढ, कुटीर उद्योगास फायदा व रोजगार निर्मिती तसेच ५०२ हे. आर जमीन सिंचनाचा लाभ हे सामाजिक फायदे होवून त्यायोगे सार्वजनिक हित जपल्या जाणार आहे.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे—विस्थापनाची आवश्यकता नाही सबब माहिती—निरंक

अनुसूची-चार

पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश

सामाजिक प्रभाव निर्धारण सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :- महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग ४अ महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचनेअन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-यांचे पदनाम—प्रशासकीय नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासनाच्या कार्यालयाचा पत्ता—निरंक

(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे, त्या अधिसूचनेचा तपशील—निरंक

टीप—उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदुर रेल्वे यांचे कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

दिनांक २७ मार्च २०१५.

भाग १ (अ. वि. पु), म. शा. रा., अ, क्र. ७०७.

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहता करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३.

क्रमांक-प्र.अ.भू.सं.-अ.का.-कावि-५०६-२०१५. —

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहता करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम ३ च्या खंड (इ) परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना महसुल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र.क्र.७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त अधिसूचना ” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे, असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड-अे) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टर पेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमिन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमिन ” असा करण्यात आला आहे.) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन ” असा केला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे असे वाटते. ज्याच्या स्वरुपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाचे कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने बाधीत व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमुद करावीत.)

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-चार मध्ये दिलेला आहे.

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहता या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाचमध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर या अनुसूचीमध्ये तपशील नमुद करावा.)

त्याअर्थी, आता असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (४) अनुसार कोणतीही व्यक्ती ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमुद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सुट देता येईल.

परंतु, आणखी असे की, कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरःसर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-याकडून भरपाई दिल्या जाणार नाही.

तसेच उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार जिल्हाधिकारी भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहता करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त नियम ” असा करण्यात आला आहे.) यांच्या नियम १० च्या उपनियम (३) द्वारे विहीत केल्याप्रमाणे भूमिअभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये समुचित शासन असलेला जिल्हाधिकारी उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक २७-४७-२०१४-१५.

गाव : धानोरा मोगल, तालुका : चांदूर रेल्वे, जिल्हा : अमरावती.

| अ. क्र. | भूमापन क्रमांक किंवा गट नंबर | अंदाजे क्षेत्र | | |
|----------|------------------------------|---------------------|------------------|--------------|
| | | लागवड योग्य क्षेत्र | पोट खराब क्षेत्र | एकूण क्षेत्र |
| (१) | (२) | हे. आर | (३) हे. आर | हे. आर |
| १ | ४६ | ५ ६१ | . . | ५ ६१ |
| २ | ४५ | १ ६८ | . . | १ ६८ |
| ३ | ५३ पैकी | ३ ०० | . . | ३ ०० |
| ४ | ६३ पैकी | ० ८२ | ० १५ | ० ९७ |
| एकूण . . | | ११ ११ | ० १५ | ११ २६ |

अनुसूची दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नाव : रायगड नदी प्रकल्प.

प्रकल्प कार्याचे वर्णन : धानोरा मोगल येथे रायगड प्रकल्पाचे धरणाचे बांधकामासाठी (धरण व बुडीत क्षेत्र).

समाजाला मिळणारे लाभ : या प्रकल्पा अंतर्गत ८ गावांना सिंचनासाठी पाणी, पिण्याच्या पाण्याची उपलब्धता, औद्योगिक वसाहतीसाठी पाणी पुरवठ्याचे सार्वजनिक प्रयोजन, समाजाला राष्ट्रीय संपत्तीत वाढ, मत्स्यव्यवसाय, पशुसंवर्धनामध्ये वाढ, कुटिर उद्योगास फायदा व रोजगार निर्मीती तसेच १५७०.०० हे. आर जमीन सिंचनाचा लाभ हे सामाजिक फायदे होवुन त्यायोगे सार्वजनिक हित जपल्या जाणार आहे.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे : विस्थापनाची आवश्यकता नाही सबब, माहिती निरंक.

अनुसूची-चार

(पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश)

(सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) सामाजिक प्रभाव निर्धारण सारांश. -

महाराष्ट्र शासन राजपत्र, असाधारण, भाग ४ अ, महसुल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सुट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील—

(अ) प्रशासक म्हणुन नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-याचे पदनाम : प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासनाच्या कार्यालयाचा पत्ता : निरंक

(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे त्या : निरंक
अधिसूचनेचा तपशील

टीप : उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदुर रेल्वे यांच्या कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु), म. शा. रा., अ, क्र. ७०८.

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहती करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३.

क्रमांक-प्र.अ.भू.सं.-अ.का.-कावि-५१२-२०१५. —

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम ३ च्या खंड (इ) परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करुन काढण्यात आलेली अधिसूचना महसुल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र.क्र.७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त अधिसूचना” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे, असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड-अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टर पेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमिन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल.

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमिन” असा करण्यात आला आहे.) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन” असा केला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे असे वाटते. ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाचे कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे.

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमुद करावीत.)

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-चार मध्ये दिलेला आहे.

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर या अनुसूचीमध्ये तपशिल नमुद करावा.)

त्याअर्थी, आता असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (४) अनुसार कोणतीही व्यक्ती ही अधिसूचना प्रसिद्ध दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमुद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सुट देता येईल.

परंतु, आणखी असे की, कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरःसर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-याकडून भरपाई दिल्या जाणार नाही.

तसेच उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार जिल्हाधिकारी भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्यांचा निर्देश “उक्त नियम” असा करण्यात आला आहे.) यांच्या नियम १० च्या उपनियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमिअभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये समुचित शासन असलेला जिल्हाधिकारी उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी नितीन व्यवहारे, उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदुर रेल्वे यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ३१-४७-२०१४-१५.

गाव : पळसखेड, तालुका : चांदूर रेल्वे, जिल्हा : अमरावती.

| अ. क्र. | भूमापन क्रमांक किंवा गट नंबर | अंदाजे क्षेत्र | | |
|---------|------------------------------|---------------------|------------------|--------------|
| | | लागवड योग्य क्षेत्र | पोट खराब क्षेत्र | एकूण क्षेत्र |
| (१) | (२) | हे. आर | हे. आर | हे. आर |
| १ | ५५ पैकी | १ ४० | . . | १ ४० |
| २ | १०० पैकी | ० ८० | ० ०७ | ० ८७ |
| | - | | | |
| | एकूण . . | २ २० | ० ०७ | २ २७ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नाव : रायगड नदी प्रकल्प.

प्रकल्प कार्याचे वर्णन : पळसखेड येथे रायगड प्रकल्पाचे धरणाचे बांधकामासाठी.
(धरण व बुडीत क्षेत्र)

समाजाला मिळणारे लाभ : या प्रकल्पा अंतर्गत ८ गावांना सिंचनासाठी पाणी, पिण्याच्या पाण्याची उपलब्धता, औद्योगिक वसाहतीसाठी पाणी पुरवठ्याचे सार्वजनिक प्रयोजन, समाजाला राष्ट्रीय संपत्तीत वाढ, मत्स्यव्यवसाय, पशुसंवर्धनामध्ये वाढ, कुटिर उद्योगांस फायदा व रोजगार निर्मिती तसेच १५७०.०० हे. आर जमीन सिंचनाचा लाभ हे सामाजिक फायदे होवुन त्यायोगे सार्वजनिक हित जपल्या जाणार आहे.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे : विस्थापनाची आवश्यकता नाही, सबब माहीती निरंक.

अनुसूची-चार

(पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश)

(सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) - सामाजिक प्रभाव निर्धारण सारांश.—

महाराष्ट्र शासन राजपत्र, असाधारण, भाग ४अ, महसुल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सुट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील.—

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-याचे पदनाम : प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासनाच्या कार्यालयाचा पत्ता : निरंक

(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे त्या : निरंक
अधिसूचनेचा तपशील.

टीप : उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांच्या कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

दिनांक २७ एप्रिल, २०१५.

भाग १ (अ. वि. पु), म. शा. रा., अ. क्र. ७०९.

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहता करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३.

क्रमांक-प्र.अ.भु.सं.-अ.का.-कावि-५८७-२०१५. —

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम ३ च्या खंड (इ) परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना महसुल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र.क्र.७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त अधिसूचना” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे, असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड-अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टर पेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमिन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल.

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमिन” असा करण्यात आला आहे.) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन” असा केला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे असे वाटते. ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे.

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाचे कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने बाधीत व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमुद करावीत.)

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-चार मध्ये दिलेला आहे.

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर या अनुसूचीमध्ये तपशील नमुद करावा.)

त्याअर्थी, आता असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (४) अनुसार कोणतीही व्यक्ती ही अधिसूचना प्रसिद्ध दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमुद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सुट देता येईल.

परंतु, आणखी असे की, कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरःसर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-याकडून भरपाई दिल्या जाणार नाही.

तसेच उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार जिल्हाधिकारी, भूमिसंपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम २०१४ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त नियम” असा करण्यात आला आहे.) यांच्या नियम १० च्या उपनियम (३) द्वारे विहीत केल्याप्रमाणे भूमिअभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

अ-एक-१५ (१५७०).

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये समुचित शासन असलेला जिल्हाधिकारी उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ०७-४७-२०१४-१५.

गाव : पंहु, तालुका : नांदगाव खंडेश्वर, जिल्हा : अमरावती.

अ. क्र. भूमापन क्रमांक किंवा

अंदाजे क्षेत्र

| गट नंबर | | | | |
|---------|-------------|---------------------|------------------|--------------|
| (१) | (२) | लागवड योग्य क्षेत्र | पोट खराब क्षेत्र | एकूण क्षेत्र |
| | | हे. आर | हे. आर | हे. आर |
| १ | ५३/२/५ पैकी | ० २३ | . . | ० २३ |
| २ | ५३/२/१ | ० २९ | . . | ० २९ |
| ३ | ५७/४ | ० २६ | . . | ० २६ |
| ४ | ५७/३ | ० १८ | . . | ० १८ |
| ५ | ५१ पैकी | ० ६० | . . | ० ६० |
| ६ | ५१ पैकी | ० ६४ | . . | ० ६४ |
| ७ | ५८/१ पैकी | ० ३६ | . . | ० ३६ |
| ८ | ५८/१अ पैकी | ० १४ | . . | ० १४ |
| ९ | ५८/१अ पैकी | ० २० | . . | ० २० |
| १० | ५८/२ | ० ०८ | . . | ० ०८ |
| ११ | ७३/३ | ० १६ | . . | ० १६ |
| १२ | ७३/१ | ० १२ | . . | ० १२ |
| १३ | ७२/२अ | ० २७ | . . | ० २७ |
| १४ | ७३/२ | ० २३ | . . | ० २३ |
| १५ | ७४/४ | ० ३३ | . . | ० ३३ |
| १६ | ७५ पैकी | ० ०२ | . . | ० ०२ |
| १७ | ७५ पैकी | ० १८ | . . | ० १८ |
| १८ | ५९/१ | ० १० | . . | ० १० |
| १९ | ७६/२ पैकी | ० १९ | . . | ० १९ |
| २० | ७६/२ पैकी | ० १५ | . . | ० १५ |
| २१ | ४१ पैकी | ० ७४ | . . | ० ७४ |
| २२ | ४०/१ | ० १९ | . . | ० १९ |
| २३ | ४०/२ | ० २० | . . | ० २० |
| २४ | ३९/३ | ० ५९ | . . | ० ५९ |
| २५ | ३९/२ | ० ०२ | . . | ० ०२ |
| २६ | ९/१ पैकी | ० ११ | . . | ० ११ |
| २७ | १०/४ पैकी | ० ०९ | . . | ० ०९ |
| २८ | १०/५ | ० १० | . . | ० १० |
| २९ | १०/१ब | ० ०९ | . . | ० ०९ |
| ३० | २९/१ | ० १७ | . . | ० १७ |
| ३१ | २९/२ | ० ११ | . . | ० ११ |
| ३२ | २९/३ | ० ११ | . . | ० ११ |
| ३३ | १३ पैकी | १ ३६ | . . | १ ३६ |
| ३४ | १७/२ | ० ३० | . . | ० ३० |
| ३५ | २० पैकी | ० ११ | . . | ० ११ |
| ३६ | १८/१ | ० २४ | . . | ० २४ |
| ३७ | ५०/१ | ० १० | . . | ० १० |
| ३८ | ५०/२ | ० ०५ | . . | ० ०५ |
| ३९ | ५०/३ | ० ०५ | . . | ० ०५ |
| ४० | ५०/४ | ० ०६ | . . | ० ०६ |
| ४१ | ५०/५ | ० ०६ | . . | ० ०६ |

| अनुसूची-एक-चालू | | | | |
|-----------------|-----------|--------|--------|--------|
| (१) | (२) | हे. आर | हे. आर | हे. आर |
| ४२ | ५०/६ | ० ०६ | . . | ० ०६ |
| ४३ | ५०/७ | ० ०७ | . . | ० ०७ |
| ४४ | ४९ पैकी | ० ०८ | . . | ० ०८ |
| ४५ | ४९/४ | ० ११ | . . | ० ११ |
| ४६ | ४९/१अ | ० १८ | . . | ० १८ |
| ४७ | ४६/१ पैकी | ० २५ | . . | ० २५ |
| ४८ | ३५/२/१ | ० ४२ | . . | ० ४२ |
| ४९ | ४८/२ | ० २५ | . . | ० २५ |
| ५० | ४७/१ पैकी | ० ४५ | . . | ० ४५ |
| ५१ | ५५/१ | ० २४ | . . | ० २४ |
| एकूण . . | | ११ ६९ | . . | ११ ६९ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरुपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नाव : चांदी नदी प्रकल्प.

प्रकल्प कार्याचे वर्णन : चांदी नदी प्रकल्पाच्या मुख्य कालव्यावरील पडुर कालवा, वितरीका व पडुर उजवा कालवा कणी मिर्झापुर लघु कालवा क्र. १, च्या बांधकामासाठी.

(धरण व बुडीत क्षेत्र)

समाजाला मिळणारे लाभ : या प्रकल्पा अंतर्गत एकूण १८३५ जमिनीस पाणी पुरवठा होईल. व १४.८१ द.ल.घ.मी. पाणीसाठा निर्माण होईल. पाणी, पुरवठ्याचे सार्वजनिक प्रयोजन, समाजाला राष्ट्रीय संपत्तीत वाढ, मत्स्यव्यवसाय, पशुसंवर्धनामध्ये वाढ, कुटिर उद्योगास फायदा व रोजगार निर्मिती सामाजिक फायदे होवुन त्यायोगे सार्वजनिक हित जपल्या जाणार आहे.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे : विस्थापनाची आवश्यकता नाही सबब, माहिती निरंक.

अनुसूची-चार

(पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश)

(सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) - सामाजिक प्रभाव निर्धारण सारांश.—

महाराष्ट्र शासन राजपत्र, असाधारण, भाग ४अ, महसुल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सुट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील.—

(अ) प्रशासक म्हणुन नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-याचे पदनाम : प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासनाच्या कार्यालयाचा पत्ता : निरंक

(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे त्या : निरंक
अधिसूचनेचा तपशील.

टीप : उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, चांदूर रेल्वे यांच्या कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

दिनांक १९ मे २०१५.

भाग १ (अ. वि. पु), म. शा. रा., अ, क्र. ७१०.

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहता करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३.

क्रमांक-प्र.अ.भू.सं.-अ.का.-कावि-६१८-२०१५. —

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहता करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) याच्या कलम ३ च्या खंड (इ) परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना महसुल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र.क्र.७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त अधिसूचना” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे, असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड-अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टर पेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमिन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमिन” असा करण्यात आला आहे.) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन” असा केला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे असे वाटते. ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाचे कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने बाधित व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमुद करावीत.)

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-चार मध्ये दिलेला आहे.

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहता या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाचमध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर या अनुसूचीमध्ये तपशील नमुद करावा.)

त्याअर्थी, आता असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (४) अनुसार कोणतीही व्यक्ती ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमुद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सुट देता येईल.

परंतु, आणखी असे की, कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरःसर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-याकडून भरपाई दिल्या जाणार नाही.

तसेच उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार जिल्हाधिकारी भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहता करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त नियम” असा करण्यात आला आहे.) यांच्या नियम १० च्या उपनियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमिअभिलेखाच्या अद्ययावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये समुचित शासन असलेला जिल्हाधिकारी उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक १०६-४७-२०१२-१३.

गाव : गडगामालूर, तालुका : धारणी, जिल्हा : अमरावती.

| अ. क्र. (१) | भूमापन क्र./किंवा गट नंबर (२) | अंदाजे क्षेत्र (३) |
|----------------|----------------------------------|-----------------------|
| | | हे. आर |
| १ | ८ अ | ० २० |
| २ | ८ क | ० २० |
| ३ | ८ ड | ० २० |

अनुसूची—एक—चालू

| (१) | (२) | (३) |
|-----|----------|--------|
| | | हे. आर |
| ४ | १३ | ० ६३ |
| ५ | १६ | ० ३१ |
| ६ | १११ | ० ७१ |
| ७ | ११२ अ | ० २० |
| ८ | ११२ ब | ० २० |
| ९ | ११२ क | ० २० |
| १० | ११४ पै. | ० २० |
| ११ | ११४ पै. | ० ४० |
| १२ | ११५ | ० ६५ |
| १३ | ११६ | ० ३० |
| १४ | ११७ | ० १५ |
| १५ | १२० | ० ८७ |
| १६ | १२५ | ० ८८ |
| १७ | १२६ ब | ० ४६ |
| १८ | १२६ क | ० ४६ |
| १९ | १२८ अ | ० २१ |
| २० | १२८ ब | ० ४० |
| २१ | १२८ क | ० ३० |
| २२ | १२९ पै. | ० ३५ |
| २३ | १२९ पै. | ० ३६ |
| २४ | १२९ पै. | ० ३५ |
| २५ | १२९ पै. | ० ३६ |
| २६ | १२९ पै. | ० ३० |
| २७ | १३० | १ १५ |
| २८ | १३१ | १ ९७ |
| | एकूण . . | १२ ९७ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नाव : गर्गा मध्यम प्रकल्प.

प्रकल्प कार्याचे वर्णन : बिजूधावडी येथे मध्यम प्रकल्प धरण बांधून पाणी अडविणे. सदर प्रकरण बुडित क्षेत्राकरिता.

समाजाला मिळणारे लाभ : प्रकल्पामुळे आदिवासी व डोंगराळ भागातील ४२८१.०० हे. जमिनीस सिंचनाचा लाभ होणार आहे. त्यामुळे शेतकऱ्यांचे उत्पन्न वाढणार आहे. तसेच पिण्याच्या पाण्याची समस्या सुटणार आहे. तसेच औद्योगिक वापराकरता पाणी उपलब्ध होणार आहे. यामुळे आदिवासी ग्रामस्थांचे जिवनमान उंचावून रोजगार तसेच आर्थिक प्रगती साध्य होणार आहे.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे : सदर प्रकरणी विस्थापन होत नाही, सबब माहिती निरंक.

अ-एक-१६ (१५७०).

अनुसूची-चार

(पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश)

सामाजिक प्रभाव निर्धारण सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने) :-

महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण, भाग ४अ, महसूल व वन विभाग मुंबई दिनांक १३ मार्च २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-याचे पदनाम : प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता : निरंक

(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे त्या : निरंक
अधिसूचनेचा तपशील.

टीप : उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांच्या कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु), म. शा. रा., अ. क्र. ७११.

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहता करतांना वाजवी भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३.

क्रमांक अ.का.-भूसंपादन-कावि-६१९-२०१५. —

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) यांच्या कलम ३ च्या खंड (इ) परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना महसूल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र.क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त अधिसूचना” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे, असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टर पेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमीन” असा करण्यात आला आहे.) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्यांचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे असे वाटते. ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेली आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाचे कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची आवश्यकता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमुद करावीत.)

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-चार मध्ये दिलेला आहे.

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर या अनुसूचीमध्ये तपशील नमुद करावा.)

त्याअर्थी, आता असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (४) अनुसार कोणतीही व्यक्ती ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमुद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल.

परंतु आणखी असे की, कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-याकडून भरपाई दिल्या जाणार नाही.

तसेच उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार जिल्हाधिकारी भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्यांचा निर्देश “उक्त नियम” असा करण्यात आला आहे.) यांच्या नियम १० च्या उप नियम (३) द्वारे विहीत केल्याप्रमाणे भूमि अभिलेखाच्या अद्यावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये समुचित शासन असलेला जिल्हाधिकारी उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ६४-४७-२०१२-२०१३,

गाव : गडगामालूर, तालुका : धारणी, जिल्हा : अमरावती.

| अ. क्र. (१) | भूमापन क्र. किंवा गट नंबर (२) | अंदाजित क्षेत्र (३) |
|----------------|----------------------------------|------------------------|
| | | हे. आर |
| १ | १३९ | ० ६० |
| २ | १२९ | ० २० |
| ३ | ३९ | ० ३० |
| ४ | १६ | ० ३९ |
| ५ | १२पै | ० ०८ |
| ६ | १२पै | ० १० |
| ७ | १२पै | ० १० |
| ८ | १४पै | ० २० |
| ९ | १४पै | ० १० |
| १० | १५पै | ० १० |
| ११ | १५पै | ० ०८ |
| १२ | १२० | ० १० |
| १३ | १२१पै | ० ६० |
| १४ | १२१पै | ० ६० |
| १५ | १२२ | ० ३० |
| १६ | १२५ | ० १२ |
| १७ | १३३ | ० १० |
| १८ | १३३ | ० १० |
| १९ | १३३ | ० १० |
| २० | १३० | ० २० |
| २१ | १३१ | ० २२ |
| २२ | १३४ | ० ३० |
| २३ | १३५ | ० १० |
| २४ | १३८ | ० ३० |
| २५ | १२४ | ० ६५ |
| २६ | १२७ | १ ६० |
| २७ | १२८ | ० ५० |
| २८ | १२८ | ० ८० |
| २९ | १२८ | ० ६० |
| ३० | ५ | ० ०५ |
| ३१ | ८ब | ० २६ |
| ३२ | ३८ | ० २० |
| ३३ | ३१पै | ० ०९ |
| ३४ | ३१पै | ० १० |
| ३५ | ३१पै | ० ०६ |

अनुसूची-एक

| (१) | (२) | (३) |
|-----|------|--------|
| | | हे. आर |
| ३६ | ३१पै | ० ०२ |
| ३७ | ३३पै | ० १० |
| ३८ | ३३पै | ० २० |
| ३९ | ३३पै | ० १० |
| ४० | ३६पै | ० १० |
| ४१ | ३३पै | ० १० |
| ४२ | ३३पै | ० ०८ |
| ४३ | ३३पै | ० ०९ |
| ४४ | ३३पै | ० १२ |
| | एकूण | ११ १३ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरुपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नाव : गर्गा मध्यम प्रकल्प

प्रकल्प कार्याचे वर्णन : बिजूधावडी येथे मध्यम प्रकल्प धरण बांधून पाणी अडविणे. सदर प्रकरण बुडित क्षेत्राकरिता.

सामाजाला मिळणारे लाभ : प्रकल्पामुळे आदिवासी व डोंगराळ भागातील ४२८१.०० हे. जमिनीस सिंचनाचा लाभ होणार आहे. त्यामुळे शेतक-यांचे उत्पन्न वाढणार आहे. तसेच पिण्याच्या पाण्याची समस्या सुटणार आहे. तसेच औद्योगिक वापराकरता पाणी उपलब्ध होणार आहे. यामुळे आदिवासी ग्रामस्तांचे जिवनमान उंचावून रोजगार तसेच आर्थिक प्रगती साध्य होणार आहे.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे : सदर प्रकरणी विस्थापन होत नाही. सबब माहिती निरंक

अनुसूची-चार

(पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश)

सामाजिक प्रभाव निर्धारण सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने) :-

महाराष्ट्र शासन राजपत्र, असाधारण, भाग ४अ, महसूल व वन विभाग मुंबई दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-याचे पदनाम : प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता : निरंक

(क) ज्या अधिसूचनाद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे त्या : निरंक
अधिसूचनेचा तपशील.

टीप : उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांचे कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु), म. शा. रा., अ, क्र. ७१२.

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्स्थापना करतांना वाजवी भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३.

क्रमांक अ.का.-भूसंपादन-कावि-६२३-२०१५. —

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) यांच्या कलम ३ च्या खंड (इ) परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना महसूल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र.क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त अधिसूचना” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे, असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टर पेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानल्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमीन” असा करण्यात आला आहे.) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे असे वाटते. ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेली आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाचे कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची आवश्यकता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने बाधित व्यक्तींचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमुद करावीत.)

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश या सोबत जोडलेल्या अनुसूची-चार मध्ये दिलेला आहे.

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर या अनुसूचीमध्ये तपशील नमुद करावा.)

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (४) अनुसार कोणतीही व्यक्ती ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमुद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल.

परंतु आणखी असे की, कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-याकडून भरपाई दिल्या जाणार नाही.

तसेच उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार जिल्हाधिकारी भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त नियम” असा करण्यात आला आहे.) यांच्या नियम १० च्या उप नियम (३) द्वारे विहीत केल्याप्रमाणे भूमि अभिलेखाच्या अद्यावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये समुचित शासन असलेला जिल्हाधिकारी उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ६७-४७-२०१२-२०१३,

गाव : मान्सूधावडी, तालुका : धारणी, जिल्हा : अमरावती.

| अ. क्र. (१) | भूमापन क्र. किंवा गट नंबर (२) | अंदाजित क्षेत्र (३) |
|----------------|----------------------------------|------------------------|
| | | हे. आर |
| १ | ७६ | २ ३४ |
| २ | ११९पै | ० ८६ |

अनुसूची-एक

| (१) | (२) | (३) |
|-----|-------|--------|
| | | हे. आर |
| ३ | ११९पै | ० ८५ |
| ४ | ११९पै | ० ८६ |
| ५ | १२३पै | १ ०० |
| | एकूण | ५ ९१ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरुपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नाव : गर्गा मध्यम प्रकल्प

प्रकल्प कार्याचे वर्णन : बिजूधावडी येथे मध्यम प्रकल्प धरण बांधून पाणी अडविणे. सदर प्रकरण बुडित क्षेत्राकरिता.

सामाजाला मिळणारे लाभ : प्रकल्पामुळे आदिवासी व डोंगराळ भागातील ४२८१.०० हे. जमिनीस सिंचनाचा लाभ होणार आहे. त्यामुळे शेतक-यांचे उत्पन्न वाढणार आहे. तसेच पिण्याच्या पाण्याची समस्या सुटणार आहे. तसेच औद्योगिक वापराकरता पाणी उपलब्ध होणार आहे. यामुळे आदिवासी ग्रामस्तांचे जिवनमान उंचावून रोजगार तसेच आर्थिक प्रगती साध्य होणार आहे.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे : सदर प्रकरणी विस्थापन होत नाही. सबब माहिती निरंक.

अनुसूची-चार

(पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश)

सामाजिक प्रभाव निर्धारण सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने) :-

महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग ४अ महसूल व वन विभाग मुंबई दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचने अन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-याचे पदनाम : प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता : निरंक

(क) ज्या अधिसूचनाद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे त्या : निरंक
अधिसूचनेचा तपशील.

टीप : उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांचे कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु), म. शा. रा., अ. क्र. ७१३.

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहता करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३.

क्रमांक अ.का.-भूसंपादन-कावि-६२४-२०१५. —

ज्याअर्थी, भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहता करताना उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) यांच्या कलम ३ च्या खंड (इ) परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली अधिसूचना महसूल व वन विभाग क्र. संकीर्ण ११-२०१४-प्र.क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी २०१५ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त अधिसूचना” असा करण्यात आला आहे.) याद्वारे, असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (झेड अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टर पेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमिन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानल्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या अमरावती जिल्ह्याच्या जिल्हाधिका-यास यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “उक्त जमीन” असा करण्यात आला आहे.) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त सार्वजनिक प्रयोजन” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे असे वाटते. ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेली आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाचे कलम ११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची आवश्यकता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमि संपादनाच्या अनुषंगाने बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमुद करावीत.)

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-चार मध्ये दिलेला आहे.

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहता या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्ती करणे आवश्यक असेल तर या अनुसूचीमध्ये तपशील नमुद करावा.)

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (४) अनुसार कोणतीही व्यक्ती ही अधिसूचना प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर जिल्हाधिका-यास विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमुद करून अशा मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल.

परंतु आणखी असे की, कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-याकडून भरपाई दिल्या जाणार नाही.

तसेच उक्त अधिनियमाच्या कलम ११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार जिल्हाधिकारी भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहता करताना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “उक्त नियम” असा करण्यात आला आहे.) यांच्या नियम १० च्या उप नियम (३) द्वारे विहीत केल्याप्रमाणे भूमि अभिलेखाच्या अद्यावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये समुचित शासन असलेला जिल्हाधिकारी उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ४४-४७-२०१२-२०१३,

गाव : पाटीया, तालुका : धारणी, जिल्हा : अमरावती.

| अ. क्र. (१) | भूमापन क्र. किंवा गट नंबर (२) | अंदाजित क्षेत्र (३) |
|----------------|----------------------------------|------------------------|
| | | हे. आर |
| १ | ७४ | ३ ५२ |
| २ | ७५ | ४ ७७ |
| ३ | ७६ | ५ ८१ |
| ४ | ७७ | ० ६० |
| ५ | ७८ | ३ ५३ |

अनुसूची-एक—चालू

| (१) | (२) | (३) |
|-----|------|--------|
| | | हे. आर |
| ६ | ७९ | ० २३ |
| ७ | ८० | ० २० |
| ८ | ८१ | ० ९० |
| ९ | ८२ | ० ६५ |
| १० | ८३ | २ ४४ |
| ११ | ८४ | ४ ६० |
| १२ | ८५ | १ ३७ |
| १३ | ८६ | ० ३५ |
| १४ | ८७ | २ ५० |
| १५ | ९० | २ १७ |
| १६ | ९१ | ० ४० |
| १७ | ७३ | १ ७८ |
| १८ | ७२ | १ ७५ |
| १९ | ७१ | २ ३५ |
| २० | ९२/ब | ० ११ |
| | एकूण | ४० ०३ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरुपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नाव : पाटीया ल. पा. (संग्राहक)

प्रकल्प कार्याचे वर्णन : सिंचन व पिण्याचे पाणी

सामाजाला मिळणारे लाभ : सदर प्रकल्प निर्मितीमुळे आर्थिक उन्नती होवून जीवनमानात सुधारणा होईल, पिण्याच्या व शेतीकरीता पाण्याचा स्त्रोत निर्माण होईल. कृषी उत्पन्नात वाढ व गुरदोरांना पिण्यासाठी पाणी उपलब्ध होईल.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे : सदर प्रकरणी विस्थापन होत नाही. सबब माहिती निरंक.

अनुसूची-चार

(पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश)

सामाजिक प्रभाव निर्धारण सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने) :-

महाराष्ट्र शासन राजपत्र, असाधारण, भाग ४अ, महसूल व वन विभाग मुंबई दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचने अन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-याचे पदनाम : प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता : निरंक

(क) ज्या अधिसूचनाद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे त्या : निरंक
अधिसूचनेचा तपशील.

टीप : उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांचे कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ७१४.

भूमि संपादन, पुनर्वसन व पुनर्स्थापना करतांना वाजवी भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३.

क्रमांक अ.का.-भूसंपादन-कावि-६२६-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमी संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहतकरिता उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) यांच्या कलम-३ च्या खंड (इ) च्या परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली शासकीय अधिसूचना, महसूल व वन विभाग, क्र. संकिर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी, २०१५ (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त अधिसूचना ” असा करण्यात आला आहे) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-३ च्या खंड (झेड-अे) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टर पेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी यांनी सोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त जमीन ” असा करण्यात आला आहे) या सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “ उक्त सार्वजनिक प्रयोजन ” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते, ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमी संपादनाच्या अनुषंगाने बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमूद करावीत).

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-चार मध्ये दिलेला आहे.

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्त करणे आवश्यक असले तर, या अनुसूचीमध्ये तपशील नमूद करावा).

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम ४ अनुसार कोणतीही व्यक्ती ही अधिसूचना प्रसिद्ध दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण-चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिका-यांस विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून मालकास उपरोक्त तरतुदींच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल ;

परंतु, आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदींचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिल्या जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार, जिल्हाधिकारी भूमी संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्यांचा निर्देश “ उक्त नियम ” असा करण्यात आला आहे) याच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमी अभिलेखाच्या अद्यावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये समुचित शासन असलेला जिल्हाधिकारी उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांना पदनिर्देशित करित आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ५-४७-२०१४-२०१५

गाव हातिदा, तालुका धारणी, जिल्हा अमरावती

| अ. क्र. | भूमापन क्र. किंवा गट क्र. | अंदाजित क्षेत्र |
|---------|---------------------------|-----------------|
| (१) | (२) | (३) |
| | | हे. आर |
| १ | ८० | १ ६६ |
| २ | ८१/अ | ० ७३ |
| ३ | ८१/ब | ० ७३ |

अनुसूची-एक (चालू)

| (१) | (२) | (३) |
|------|------|--------|
| | | हे. आर |
| ४ | ८१/क | ० ७४ |
| ५ | ८२ | ० ८८ |
| ६ | ८३ | ० ६४ |
| ७ | ८५ | ० ४० |
| ८ | ९७ | १ ०० |
| एकूण | | ६ ७८ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नांव :—गर्गा मध्यम प्रकल्प

प्रकल्प कार्याचे वर्णन :—बिजूधावडी येथे मध्यम प्रकल्प धरण बांधून पाणी अडविणे. सदर प्रकरण बुडित क्षेत्राकरिता.

समाजाला मिळणारे लाभ :—प्रकल्पामुळे आदिवासी व डोंगराळ भागातील ४२८१.०० हे. जमिनीस सिंचनाचा लाभ होणार आहे. त्यामुळे शेतक-यांचे उत्पन्न वाढणार आहे. तसेच पिण्याच्या पाण्याची समस्या सुटणार आहे. तसेच औद्योगिक वापराकरिता पाणी उपलब्ध होणार आहे. यामुळे आदिवासी ग्रामस्थांचे जिवनमान उंचावून रोजगार तसेच आर्थिक प्रगती साध्य होणार आहे.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे :—सदर प्रकरणी विस्थापन होत नाही. सबब माहिती निरंक.

अनुसूची-चार

(पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश)

सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :—महाराष्ट्र शासन राजपत्र, असाधारण भाग ४-अ, महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सुट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-यांचे पदनाम :—प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता :—निरंक

(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे त्या अधिसूचनेचा तपशील :—निरंक

टीप- उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांच्या कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ७१५.

भूमी संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहता करतांना वाजवी भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३.

क्रमांक अ.का.-भूसंपादन-कावि-६२७-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमी संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहतकरिता उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) यांच्या कलम-३ च्या खंड (इ) च्या परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली शासकीय अधिसूचना, महसूल व वन विभाग, क्र. संकिर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी, २०१५ (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त अधिसूचना ” असा करण्यात

आला आहे) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-३ च्या खंड (झेड-अे) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी यांनी सोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त जमीन ” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “ उक्त सार्वजनिक प्रयोजन ” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते, ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमी संपादनाच्या अनुषंगाने बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमूद करावीत).

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-चार मध्ये दिलेला आहे.

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्त करणे आवश्यक असले तर, या अनुसूचीमध्ये तपशील नमूद करावा).

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम ४ अनुसार कोणतीही व्यक्ती ही अधिसूचना प्रसिद्ध दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण-चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिका-यांस विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून मालकास उपरोक्त तरतुदींच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल ;

परंतु, आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदींचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिल्या जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार, जिल्हाधिकारी भूमी संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्यांचा निर्देश “ उक्त नियम ” असा करण्यात आला आहे) याच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमी अभिलेखाच्या अद्यावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये समुचित शासन असलेला जिल्हाधिकारी उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ८-४७-२०१३-२०१४

गाव झिलांगपाटी, तालुका धारणी, जिल्हा अमरावती

| अ. क्र. | भूमापन क्र. किंवा गट क्र. | अंदाजित क्षेत्र |
|---------|---------------------------|-----------------|
| (१) | (२) | (३) |
| | | हे. आर |
| १ | ११४क | ० ५१ |
| २ | ५४ | ० २० |
| ३ | ५४ | ० २० |
| ४ | ७१ | ० २२ |
| ५ | ७२ | ० १६ |
| ६ | १२० | १ ०६ |

अनुसूची-एक (चालू)

| (१) | (२) | (३) |
|-----|--------|--------|
| | | हे. आर |
| ७ | ११० | १ ०० |
| ८ | ७३ | ० ६० |
| ९ | ७३पै. | ० ३० |
| १० | १२९ | ० ४६ |
| ११ | १३१ | ० २९ |
| १२ | ११८पै. | ० २९ |
| १३ | ११८पै. | ० २९ |
| १४ | ११८पै. | ० २७ |
| १५ | ११८पै. | ० २८ |
| १६ | ११६पै. | ० ५४ |
| १७ | ११६पै. | ० ५४ |
| १८ | ६२पै. | ० ६० |
| १९ | ६२पै. | ० १० |
| २० | ५९ | ० ३० |
| २१ | ५५ | ० २५ |
| २२ | ५३ | ० २० |
| २३ | ४७ | ० १५ |
| २४ | ४६ | ० २४ |
| २५ | १२८क | ० ८० |
| २६ | १२६ | ० ४० |
| २७ | १२५ | ० ७० |
| २८ | ६४ | १ ०० |
| २९ | ६८ | ० ४६ |
| ३० | ५८ | ० ०८ |
| ३१ | ११७अ | १ २२ |
| ३२ | १२२ | २ ७१ |
| ३३ | १२४अ | १ ३५ |
| ३४ | १२४ब | ० ८२ |
| ३५ | १२७ | १ ०० |
| ३६ | १४७ | १ ५१ |
| ३७ | १४८ | १ ३५ |
| ३८ | १४९ | ० ४१ |
| ३९ | १५१ | १ १९ |
| ४० | १५२पै. | ० ६६ |
| ४१ | १५३ | १ ०० |
| ४२ | १५२पै. | ० ६५ |
| ४३ | १५० | ० ६० |
| ४४ | १४०पै. | ० ५० |

अनुसूची-एक (चालू)

| (१) | (२) | (३) |
|----------|--------|--------|
| | | हे. आर |
| ४५ | १४०पै. | ० ५० |
| ४६ | १४१ | ० ४० |
| ४७ | १३६पै. | ० २५ |
| ४८ | १३६पै. | ० १८ |
| ४९ | १३३अ | ० ६० |
| ५० | १३३ब | ० ५० |
| ५१ | १३३क | ० ६० |
| ५२ | १११ | ० ८७ |
| ५३ | ११९पै. | ० ४० |
| ५४ | १४५अ | २ ०० |
| ५५ | १४५ब | ० ६० |
| एकूण . . | | ३४ २६ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नांव :—गर्गा मध्यम प्रकल्प

प्रकल्प कार्याचे वर्णन :—बिजूधावडी येथे मध्यम प्रकल्प धरण बांधून पाणी अडविणे. सदर प्रकरण बुडित क्षेत्राकरिता.

समाजाला मिळणारे लाभ :—प्रकल्पामुळे आदिवासी व डोंगराळ भागातील ४२८१.०० हे. जमिनीस सिंचनाचा लाभ होणार आहे. त्यामुळे शेतक-यांचे उत्पन्न वाढणार आहे. तसेच पिण्याच्या पाण्याची समस्या सुटणार आहे. तसेच औद्योगिक वापराकरिता पाणी उपलब्ध होणार आहे. यामुळे आदिवासी ग्रामस्थांचे जिवनमान उंचावून रोजगार तसेच आर्थिक प्रगती साध्य होणार आहे.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे :—सदर प्रकरणी विस्थापन होत नाही. सबब माहिती निरंक.

अनुसूची-चार

(पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश)

सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :—महाराष्ट्र शासन राजपत्र, असाधारण भाग ४-अ, महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सुट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-यांचे पदनाम :—प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता :—निरंक

(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे त्या अधिसूचनेचा तपशील :—निरंक

टीप- उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांच्या कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ७१६.

भूमी संपादन, पुनर्वसन व पुनर्स्थापना करतांना वाजवी भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३.

क्रमांक अ.का.-भूसंपादन-कावि-६२९-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमी संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहतकरिता उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) यांच्या कलम-३ च्या खंड (इ) च्या परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली शासकीय अधिसूचना, महसूल व वन विभाग, क्र. संकिर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी, २०१५ (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त अधिसूचना ” असा करण्यात आला आहे) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-३ च्या खंड (झेड-अे) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी यांनी सोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त जमीन ” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “ उक्त सार्वजनिक प्रयोजन ” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते, ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतूदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमी संपादनाच्या अनुषंगाने बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमूद करावीत).

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-चार मध्ये दिलेला आहे.

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्त करणे आवश्यक असले तर, या अनुसूचीमध्ये तपशील नमूद करावा).

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम ४ अनुसार कोणतीही व्यक्ती ही अधिसूचना प्रसिद्ध दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण-चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिका-यांस विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून मालकास उपरोक्त तरतुदींच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल ;

परंतु, आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदींचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-याकडून भरपाई दिल्या जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार, जिल्हाधिकारी भूमी संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “ उक्त नियम ” असा करण्यात आला आहे) याच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमी अभिलेखाच्या अद्यावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये समुचित शासन असलेला जिल्हाधिकारी उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ७२-४७-२०१२-२०१३

गाव हातिदा, तालुका धारणी, जिल्हा अमरावती

| अ. क्र. | भूमापन क्र. किंवा गट क्र. | अंदाजित क्षेत्र |
|---------|---------------------------|-----------------|
| (१) | (२) | (३) |
| | | हे. आर |
| १ | ८९ | ३ ३३ |
| २ | ५८ | ० १८ |
| ३ | ६३ | ० ०४ |

अनुसूची-एक (चालू)

| (१) | (२) | (३) |
|------|-----|--------|
| | | हे. आर |
| ४ | ६२ | ० ४६ |
| ५ | ६६ | ० १३ |
| ६ | ६७ | ३ २९ |
| ७ | ६८ | २ ५८ |
| ८ | ७० | २ ३० |
| ९ | ७१ | २ ८० |
| १० | ७२ | १ १८ |
| ११ | ७३ | ० ०९ |
| १२ | ७४ | ० ९९ |
| १३ | ७५ | ० २१ |
| १४ | ७६ | ० ३० |
| १५ | ७७ | ० ९३ |
| १६ | ८८ | ० ४० |
| १७ | ९० | ० ४३ |
| १८ | ९१ | ० १५ |
| १९ | ७९ | ० ०२ |
| एकूण | | १९ ८१ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नांव :—गर्गा मध्यम प्रकल्प

प्रकल्प कार्याचे वर्णन :—बिजधावडी येथे मध्यम प्रकल्प धरण बांधून पाणी अडविणे. सदर प्रकरण बुडित क्षेत्राकरिता.

समाजाला मिळणारे लाभ :—प्रकल्पांमुळे आदिवासी व डोंगराळ भागातील ४२८१.०० हे. जमिनीस सिंचनाचा लाभ होणार आहे. त्यामुळे शेतक-यांचे उत्पन्न वाढणार आहे. तसेच पिण्याच्या पाण्याची समस्या सुटणार आहे. तसेच औद्योगिक वापराकरिता पाणी उपलब्ध होणार आहे. यामुळे आदिवासी ग्रामस्थांचे जिवनमान उंचावून रोजगार तसेच आर्थिक प्रगती साध्य होणार आहे.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे :—सदर प्रकरणी विस्थापण होत नाही. सबब माहिती निरंक.

अनुसूची-चार

(पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश)

सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :—महाराष्ट्र शासन राजपत्र, असाधारण भाग ४-अ, महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सुट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-यांचे पदनाम :—प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता :—निरंक

(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे त्या अधिसूचनेचा तपशील :—निरंक

टीप- उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांच्या कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

दिनांक २५ मे २०१५.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ७१७.

भूमी संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करिता वाजवी भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३

क्रमांक अ.का.-भूसंपादन-कावि-७०९-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमी संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहतकरिता उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) यांच्या कलम-३ च्या खंड (इ) च्या परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली शासकीय अधिसूचना, महसूल व वन विभाग, क्र. संकिर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी, २०१५ (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त अधिसूचना ” असा करण्यात आला आहे) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-३ च्या खंड (झेड-अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी यांनी सोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त जमीन ” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्यांचा निर्देश “ उक्त सार्वजनिक प्रयोजन ” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते, ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सावर्जनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमी संपादनाच्या अनुषंगाने बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमूद करावीत).

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश यासोबत जोडलेल्या अनुसूची चार मध्ये दिलेला आहे.

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्त करणे आवश्यक असले तर, या अनुसूचीमध्ये तपशील नमूद करावा).

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम ४ अनुसार कोणतीही व्यक्ती ही अधिसूचना प्रसिद्ध दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिका-यांस विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल ;

परंतु, आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिल्या जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार, जिल्हाधिकारी भूमी संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करिता उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्यांचा निर्देश “ उक्त नियम ” असा करण्यात आला आहे) यांच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमी अभिलेखाच्या अद्यावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये समुचित शासन असलेला जिल्हाधिकारी उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ६-४७-२०१४-२०१५.

गाव : बिजूधावडी, तालुका : धारणी, जिल्हा : अमरावती

| अ. क्र. | भूमापन क्र. किंवा गट क्र. | अंदाजित क्षेत्र |
|---------|---------------------------|-----------------|
| (१) | (२) | (३) |
| | | हे. आर |
| १ | ११२पै. | ० ६३ |
| २ | ११२पै. | ० ६३ |
| ३ | १३७ | ४ ०३ |

अनुसूची-एक (चालू)

| (१) | (२) | (३) |
|-----|--------|--------|
| | | हे. आर |
| ४ | १४२ | ० २४ |
| ५ | १५२पै. | १ ३५ |
| ६ | १५२पै. | ० ०८ |
| ७ | १८२ | १ ४० |
| | एकूण | ८ ३६ |

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नांव :—गर्गा मध्यम प्रकल्प

प्रकल्प कार्याचे वर्णन :—बिजूधावडी येथे मध्यम प्रकल्प धरण बांधून पाणी अडविणे. सदर प्रकरण बुडित क्षेत्राकरिता.

समाजाला मिळणारे लाभ :—प्रकल्पामुळे आदिवासी व डोंगराळ भागातील ४२८१.०० हे. जमिनीस सिंचनाचा लाभ होणार आहे. त्यामुळे शेतक-यांचे उत्पन्न वाढणार आहे. तसेच पिण्याच्या पाण्याची समस्या सुटणार आहे. तसेच औद्योगिक वापराकरिता पाणी उपलब्ध होणार आहे. यामुळे आदिवासी ग्रामस्थांचे जिवनमान उंचावून रोजगार तसेच आर्थिक प्रगती साध्य होणार आहे.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे :—सदर प्रकरणी विस्थापण होत नाही. सबब माहिती निरंक.

अनुसूची-चार

(पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश)

सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :—महाराष्ट्र शासन राजपत्र, असाधारण भाग ४-अ, महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सुट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिका-यांचे पदनाम :—प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता :—निरंक

(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे त्या अधिसूचनेचा तपशील :—निरंक

टीप—उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उप विभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांच्या कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

भाग १ (अ. वि. पु.), म. शा. रा., अ. क्र. ७१८.

भूमी संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहती करताना वाजवी भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३

क्रमांक अ.का.-भूसंपादन-कावि-७१०-२०१५.—

ज्याअर्थी, भूमी संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहतकरिता उचित भरपाई मिळण्याचा आणि पारदर्शकतेचा हक्क अधिनियम, २०१३ (२०१३ चा ३०) यांच्या कलम-३ च्या खंड (इ) च्या परंतुकाद्वारे प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकाराचा वापर करून काढण्यात आलेली शासकीय अधिसूचना, महसूल व वन विभाग, क्र. संकिर्ण ११-२०१४-प्र. क्र. ७७-अ-२, दिनांक १९ जानेवारी, २०१५ (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त अधिसूचना ” असा करण्यात आला आहे) याद्वारे असे अधिसूचित केले आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-३ च्या खंड (झेड-अ) मध्ये व्याख्या केलेल्या एखाद्या जिल्ह्यातील ५०० हेक्टरपेक्षा अधिक नसेल इतक्या क्षेत्राकरिता जमीन संपादन करण्याच्या संबंधात, अशा जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी हा उक्त अधिनियमाच्या प्रयोजनासाठी समुचित शासन असल्याचे मानण्यात येईल ;

अ.-एक-२० (१५७०).

आणि ज्याअर्थी, उक्त अधिसूचनेनुसार समुचित शासन असलेल्या, अमरावती जिल्ह्याचा जिल्हाधिकारी यांनी सोबत जोडलेल्या अनुसूची-एक मध्ये अधिक तपशीलवार वर्णन केलेली जमीन (यात यापुढे जिचा निर्देश “ उक्त जमीन ” असा करण्यात आला आहे) सार्वजनिक प्रयोजनासाठी (यात यापुढे ज्याचा निर्देश “ उक्त सार्वजनिक प्रयोजन ” असा करण्यात आला आहे) आवश्यक आहे अथवा तिची आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे, असे वाटते, ज्याच्या स्वरूपाचे विवरण यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-दोन मध्ये दिलेले आहे ;

आणि म्हणून, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (१) च्या तरतुदीन्वये याद्वारे असे अधिसूचित करण्यात येते की, उक्त जमिनीची उक्त सार्वजनिक प्रयोजनासाठी आवश्यकता भासण्याची शक्यता आहे ;

आणि ज्याअर्थी, प्रस्तावित भूमी संपादनाच्या अनुषंगाने बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची तीन मध्ये दिलेली आहेत. (विस्थापन होणार असेल तर या अनुसूचीमध्ये कारणे नमूद करावीत).

आणि ज्याअर्थी, सामाजिक परिणाम निर्धारण सारांश यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-चार मध्ये दिलेला आहे.

आणि ज्याअर्थी, कलम ४३ च्या पोट-कलम (१) अन्वये पुनर्वसन व पुनर्वसाहत या प्रयोजनासाठी नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील, यासोबत जोडलेल्या अनुसूची-पाच मध्ये दिलेला आहे. (नियुक्त करणे आवश्यक असले तर, या अनुसूचीमध्ये तपशील नमूद करावा).

त्याअर्थी, आता, असे घोषित करण्यात येत आहे की, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम ४ अनुसार कोणतीही व्यक्ती ही अधिसूचना प्रसिद्ध दिनांकापासून ते उक्त अधिनियमाच्या प्रकरण चार खालील कार्यवाही पूर्ण होईल त्या कालावधीपर्यंत उक्त जमिनीचा अथवा तिच्या भागाचा कोणताही व्यवहार करणार नाही किंवा उक्त जमिनीवर कोणताही भार निर्माण करणार नाही.

परंतु, उक्त जमिनीच्या अथवा तिच्या भागाच्या मालकाने अर्ज केल्यावर, जिल्हाधिका-यांस विशेष परिस्थितीची कारणे लेखी नमूद करून मालकास उपरोक्त तरतुदीच्या प्रवर्तनातून सूट देता येईल ;

परंतु, आणखी असे की, जर कोणत्याही व्यक्तीने या तरतुदीचे बुद्धीपुरस्सर उल्लंघन केल्यामुळे तिला झालेल्या कोणत्याही हानीची किंवा क्षतीची जिल्हाधिका-यांकडून भरपाई दिल्या जाणार नाही.

तसेच, उक्त अधिनियमाच्या कलम-११ च्या पोट-कलम (५) अनुसार, जिल्हाधिकारी भूमी संपादन, पुनर्वसन व पुनर्वसाहत करतांना उचित भरपाई मिळण्याचा व पारदर्शकतेचा हक्क (महाराष्ट्र) नियम, २०१४ (यात यापुढे ज्यांचा निर्देश “ उक्त नियम ” असा करण्यात आला आहे) यांच्या नियम १० च्या उप-नियम (३) द्वारे विहित केल्याप्रमाणे भूमी अभिलेखाच्या अद्यावतीकरणाचे काम हाती घेणार असल्याचे व पूर्ण करणार असल्याचे देखील घोषित करण्यात येत आहे.

आणि म्हणून, त्याअर्थी, उक्त अधिनियमाच्या कलम ३ च्या खंड (छ) अन्वये समुचित शासन असलेला जिल्हाधिकारी उक्त अधिनियमाखालील जिल्हाधिका-यांची कार्ये पार पाडण्यासाठी उपविभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांना पदनिर्देशित करीत आहे.

अनुसूची-एक

जमिनीचे वर्णन

भूसंपादन प्रकरण क्रमांक ६५-४७-२०१२-२०१३.

गाव : झिलांगपाटी, तालुका : धारणी, जिल्हा : अमरावती

| अ. क्र. | भूमापन क्र. किंवा गट क्र. | अंदाजित क्षेत्र |
|---------|---------------------------|-----------------|
| (१) | (२) | (३) |
| | | हे. आर |
| १ | ८१ | १० ४० |
| २ | ८८पै. | ० ७९ |
| ३ | ८८पै. | ० ७९ |
| ४ | ८८पै. | १ ३९ |
| ५ | ८९ | ४ ८५ |
| ६ | ९१ | ३ २२ |
| ७ | ११४पै. | १ ९९ |
| ८ | ११४पै. | १ ६० |
| ९ | ११४पै. | २ ८३ |

अनुसूची-एक (चालू)

| (१) | (२) | (३) |
|-----|--------|--------|
| | | हे. आर |
| १० | ११४पै. | ० ३० |
| ११ | ११५ | ० ६२ |
| १२ | ५२ | ० १६ |
| १३ | ११६पै. | १ ८० |
| १४ | ११६पै. | १ ८० |
| १५ | १२० | १ ३० |
| १६ | ८७पै. | २ ०० |
| १७ | ८७पै. | १ ५१ |
| १८ | ९२पै. | ० ५५ |
| १९ | ९२पै. | ० ५५ |
| २० | ९२पै. | ० ५५ |
| २१ | ९३पै. | ० २१ |
| २२ | ९३पै. | ० २१ |
| २३ | ९३पै. | ० २२ |
| २४ | ९४ | ० ४४ |
| २५ | ९५ | ४ १८ |
| २६ | ६३ | ० १० |
| २७ | ६४ | ० ३० |
| २८ | ६८ | ० ४० |
| २९ | ६९ | ० ५६ |
| ३० | ८६अ | १ २० |
| ३१ | ८६ब | १ २० |
| ३२ | ८६क | १ २० |
| ३३ | ८६ड | १ ५१ |
| ३४ | ९० | ६ ५५ |
| ३५ | ८०अ | ० ९४ |
| ३६ | ८०ब | ० ९४ |
| ३७ | ८०क | ० ९३ |
| ३८ | ८०ड | ० ९३ |
| ३९ | ११२ | ३ २५ |
| ४० | ४६ | ० ३० |
| ४१ | ४७ | ० २५ |
| ४२ | ५३ | ० २० |
| ४३ | ५४ | ० २० |
| ४४ | ५४ | ० १० |
| ४५ | ५९ | ० २० |
| ४६ | ५५ | ० १५ |
| ४७ | ९७ | २ २२ |
| ४८ | ९८अ | १ ७७ |
| ४९ | ९८ब | ० ८१ |

अनुसूची-एक (चालू)

| (१) | (२) | (३) |
|-----|--------|--------|
| | | हे. आर |
| ५० | १०० | २ २० |
| ५१ | १०१ | २ ९७ |
| ५२ | १०२ | ० १४ |
| ५३ | १०६ | १ २८ |
| ५४ | ९६ | ० १२ |
| ५५ | ७० | ० ६२ |
| ५६ | ७१ | ० १८ |
| ५७ | ७२ | ० ३३ |
| ५८ | ७३पै. | ० ४० |
| ५९ | ७३पै. | ० २० |
| ६० | ७६ | १ २२ |
| ६१ | ८२अ | १ ९१ |
| ६२ | ८२ब | ० ८२ |
| ६३ | ८२क | १ ९१ |
| ६४ | ८४पै. | १ २० |
| ६५ | ८४पै. | १ २० |
| ६६ | ८४पै. | १ २२ |
| ६७ | १२५ | ० १० |
| ६८ | १२६ | ० ३० |
| ६९ | १२८पै. | ० ९९ |
| ७० | १२८पै. | १ ०० |
| ७१ | १२८पै. | ० २० |
| ७२ | १११ | ० ८७ |
| ७३ | १२९ | ० ३० |
| ७४ | १३१पै. | ० ९७ |
| ७५ | १३० | १ २८ |
| ७६ | १३२ | १ २६ |
| ७७ | ११० | ३ ६० |
| ७८ | १०९ | ० ०४ |
| ७९ | १०८ | ३ ४९ |
| ८० | १०७ | ३ २० |
| ८१ | ६२पै. | ० ४० |
| ८२ | ६२पै. | ० २० |
| ८३ | ६२पै. | ० ३० |
| ८४ | १०४ | ० ७९ |
| ८५ | ९९ | ० ०४ |

एकूण . . १०७ ७२

अनुसूची-दोन

सार्वजनिक प्रयोजनाच्या स्वरूपाबाबत विवरण

प्रकल्पाचे नांव :—गर्गा मध्यम प्रकल्प

प्रकल्प कार्याचे वर्णन :—बिजूधावडी येथे मध्यम प्रकल्प धरण बांधून पाणी अडविणे. (धरण व बुडित क्षेत्र)

समाजाला मिळणारे लाभ :—प्रकल्पामुळे आदिवासी व डोंगराळ भागातील ४२८१.०० हे. जमिनीस सिंचनाचा लाभ होणार आहे. त्यामुळे शेतकऱ्यांचे उत्पन्न वाढणार आहे. तसेच पिण्याच्या पाण्याची समस्या सुटणार आहे. तसेच औद्योगिक वापराकरिता पाणी उपलब्ध होणार आहे. यामुळे आदिवासी ग्रामस्थांचे जिवनमान उंचावून रोजगार तसेच आर्थिक प्रगती साध्य होणार आहे.

अनुसूची-तीन

बाधित व्यक्तीचे विस्थापन करण्यास भाग पाडणारी कारणे :—तातरा गाव अंशतः बाधित होत असून प्रकल्पाच्या जलाशयामध्ये ६९ घरे बाधित होत आहेत.

अनुसूची-चार

(पुनर्वसन व पुनर्वसाहत योजनेचा सारांश)

सामाजिक प्रभाव निर्धारणाचा सारांश (सामाजिक प्रभाव निर्धारण अभ्यास करणा-या अभिकरणाने दिलेला) :—महाराष्ट्र शासन राजपत्र, असाधारण भाग ४-अ, महसूल व वन विभाग, मुंबई, दिनांक १३ मार्च, २०१५ मधील अधिसूचना अन्वये सूट देण्यात आली आहे.

अनुसूची-पाच

नियुक्त केलेल्या प्रशासकाचा तपशील

(अ) प्रशासक म्हणून नियुक्त करण्यात आलेल्या अधिकाऱ्यांचे पदनाम :—प्रशासक नियुक्तीची आवश्यकता नाही.

(ब) प्रशासकाच्या कार्यालयाचा पत्ता :—निरंक

(क) ज्या अधिसूचनेद्वारे प्रशासकाची नियुक्ती करण्यात आली आहे त्या अधिसूचनेचा तपशील :—निरंक

टीप-उक्त जमिनीच्या आराखड्याचे उप विभागीय अधिकारी तथा भूसंपादन अधिकारी, धारणी यांच्या कार्यालयामध्ये निरीक्षण करता येईल.

अमरावती :
दिनांक ८ जून २०१५.

किरण गिते,
जिल्हाधिकारी,
अमरावती.